आभा झा

आवासीय पता:
116 बी, अर्जुन नगर, बी-6
सफदरजंग एन्क्लेव
नई दिल्ली-110029

संपर्क:
9871053391

ई-मेल:
abhajha15@gmail.com

कार्यालयीय पता :
गार्गी सर्वोदय कन्या विद्यालय
ग्रीनपार्क, नई दिल्ली-11001

शिक्षा : एम.ए., पीएच-डी., बी.एड., साहित्याचार्य
जन्म तिथि : 15-05-1966
वृत्ति : 9 सितम्बर 1994 सँ दिल्ली सरकार मे बतौर संस्कृत शिक्षक कार्यरत। सम्प्रति गार्गी सर्वोदय कन्या विद्यालय, ग्रीन पार्क मे संस्कृत प्रवक्ता (पी.जी.टी.)क पद पर आसीन।

संस्कृतमे प्रकाशित कृति-
व्याकरण-वैभवम्, भाग-1 (कक्षा-5)
व्याकरण-वैभवम्, भाग-2 (कक्षा-6)
व्याकरण-वैभवम्, भाग-3 (कक्षा-7)
व्याकरण-वैभवम्, भाग-4 (कक्षा-8)

हिन्दीमे प्रकाशित कृति-
झड़ते फूल (काव्य-संग्रह) 2021 ई.

मैथिलीमे प्रकाशित कृति-
कने हमरो सूनु (काव्य-संग्रह) 2020 ई.
प्रतीक्षा (कथा-संग्रह) 2020 ई.
सिनेहक दाम (बिहनि कथा-संग्रह) 2020 ई.
चिनबार (काव्य-संग्रह) 2021 ई.
आलोचनाक वातायन (आलोचना) 2022 ई.
हम, अहाँ आ मैथिली (आलेख-संग्रह) 2023 ई.
सीताक स्वर (शृंखलाबद्ध काव्य) 2023 ई.

संस्कृत, हिन्दी एवं मैथिली भाषा मे कथा कविता, लघुनाटक, आलोचना आदि विभिन्न विधाक साहित्य रचनामे प्रवृत्त। विभिन्न पत्र-पत्रिकादि मे हिन्दी आ मैथिली मे कविता, कहानी, आलोचना आदि प्रकाशित। संस्कृत अकादमी सँ अनेक शोध-निबंध, कथा, लघु नाटक, श्लोक आदि प्रकाशित। 1999 ई. सँ एनसीईआरटी आ एससीईआरटी मे रिसोर्स पर्सनक रूपमे विभिन्न पाठ्यपुस्तक, व्याकरण पुस्तक आ शिक्षक संदर्शिका-लेखन मे योगदान। 2000 ई. सँ शिक्षा निदेशालय, दिल्ली द्वारा शिक्षक सभक हेतु आयोजित क्षमता सम्वर्द्धन कार्यशाला मे रिसोर्स पर्सनक दायित्व निर्वहण।

मैत्रेयी प्रकाशन
बी-2187, गली नं. 45, कौशिक एन्क्लेव
बुराड़ी, दिल्ली-110084
ई-मेल : maitreyipublication@gmail.com

ISBN 978-81-973830-9-0

मूल्य : ₹ 150/-

बजितथि जँ उर्मिला

आभा झा

बजितथि जँ उर्मिला

(मैथिली दीर्घ कविता)

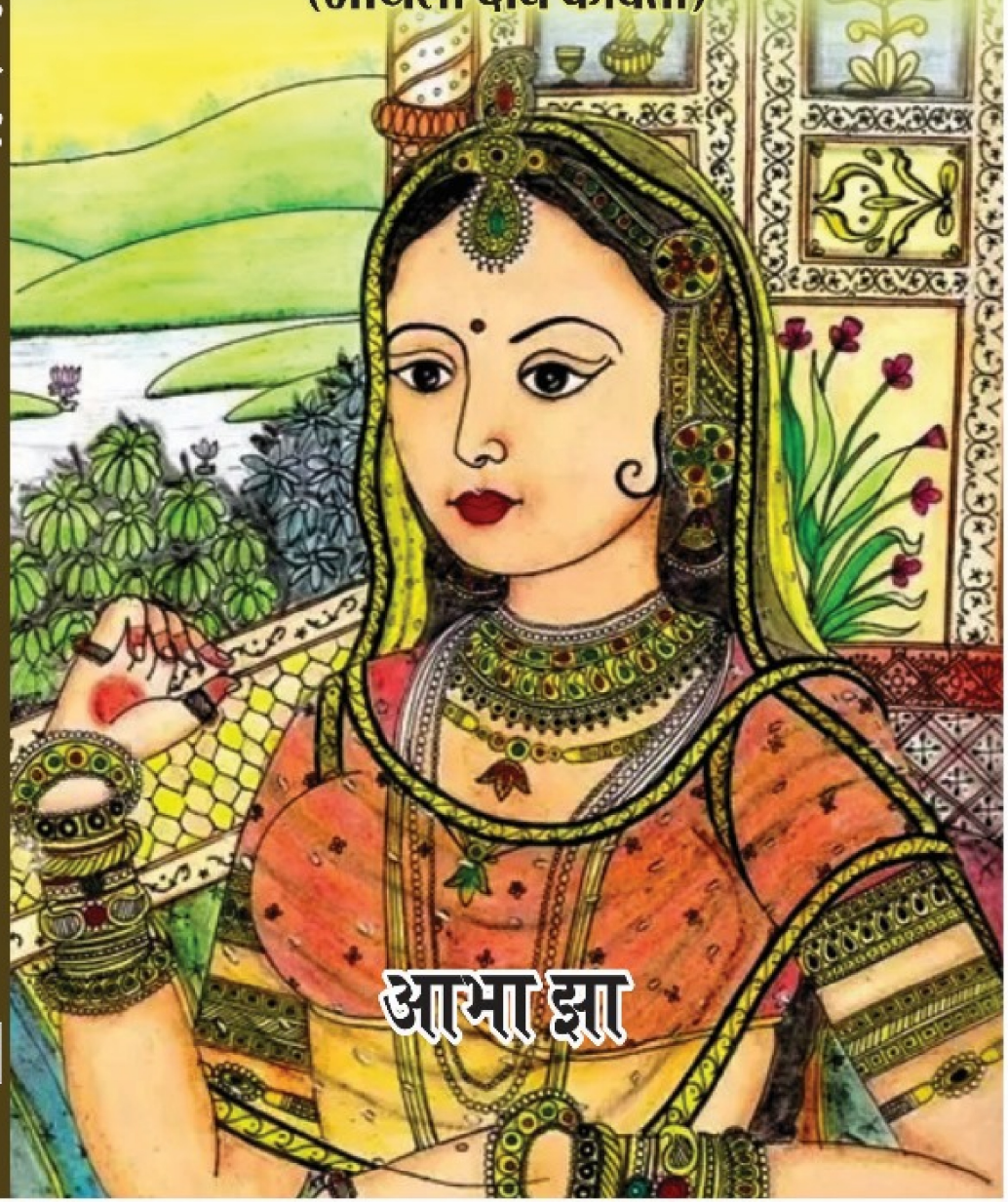

आभा झा

बजितथि जँ उर्मिला

(मैथिली दीर्घ कविता)

आभा झा

मैत्रेयी प्रकाशन, दिल्ली

बजितथि जँ उर्मिला (मैथिली दीर्घ कविता)

कवयित्री : आभा झा
116 बी, अर्जुन नगर, बी-6, सफदरजंग एन्क्लेव
नई दिल्ली-110029
सम्पर्क : 9871053391
ईमेल : abhajha15@gmail.com

ISBN : 978-81-973830-9-0

प्रकाशक : मैत्रेयी प्रकाशन, दिल्ली
बी-2187, गली नं. 45, कौशिक एन्क्लेव,
बुराड़ी, दिल्ली-110084
संपर्क: 9431693352
ईमेल: maitreyipublication@gmail.com

© : आभा झा

प्रथम संस्करण : 2024
मूल्य : ₹ 150

कला संपादन : मणिशंकर कुमार
संपर्क : 9312766899
ईमेल : kmanishankar@gmail.com

मुद्रक : आर.के. ऑफसेट प्रोसेस
नवीन शाहदरा, दिल्ली-32

Bajitathi ja Urmila by Abha Jha
First Edition : 2024, Price : ₹ 150

समर्पण

पगतल मर्दित अलक्षित उपेक्षित ओहि समस्त दूभिकेँ,
जकर होयब महत्त्व रखैछ, लोकक दृष्टिपथमे आयब नहि।

आशीर्वचन

आभा जी बड़ सरल भाषामे उर्मिलाक मनकेँ खोलि देलनि अछि। आरम्भेसँ ओ अपन दुर्भाग्यकेँ मन पाड़लनि अछि। जेठ सन्तान रहितो अनुजा कहल गेली। धनुषयज्ञसँ बान्हलि छली एके बहिन, बन्हा गेली चारू बहिन। तहिना, हिनक सम्पूर्ण जीवनकालमे, नैहर-सासुर दुनू ठाम राजपरिवारक एको गोट घटनामे हिनका ने पूछल गेलनि, ने मुक्त कयल गेलनि, अपितु सभमे जोति देल गेलनि। ने श्रेष्ठसुख ने पतिसुख ने प्रजासुख– प्रभावित मुदा प्रत्येकमे। बड़ सहज रूपमे हुनक मनोभावकेँ आ हुनका व्याजे स्त्रीजातिक वेदना- विवशता- घुटनकेँ सशक्त वाणी भेटलै अछि। हमरा जनैत एहि माध्यमे जे सन्देश लेखिका देब' चाहै छथि, से सम्प्रेषित होइ छै। तेँ एहि कृतिकेँ समाजक स्वीकृति भेटतैके– से विश्वास अछि।

आभा जीकें एहि नव कृति हेतु शुभकामना।

– भीमनाथ झा

दरभंगा

पुरोवाक्

रामकथा भारतीय संस्कृति ओ संस्कारक नियामक रहल अछि। आदिकवि वाल्मीकिक 'शोक: श्लोकत्वमागत:' सँ नि:सृत ई कथा अदौसँ भारतीय लोकजीवनमे परिव्याप्त रहल अछि आ भारतीय राजनीतिक, सामाजिक ओ सांस्कृतिक व्यवस्थाक मूलाधार बनल रहल अछि। समस्त वाङ्मयक शायदे कोनो एहन कृति होयत जाहिसँ भारतीय जीवनपद्धति तेना भऽ कऽ अनुप्राणित भेल हो जेना एहि कथासँ भेल अछि, होइत रहल अछि आ भविष्योमे ता धरि होइत रहत जाधरि भारतीयता जीवन्त रहत। भारतीय जीवनपद्धतिकेँ अनुशासित करबामे एकर बहुमूल्य योगदान तँ रहबे कयल अछि अखिल भारतक राष्ट्रीय समन्वयक ई दृढ़ सूत्र बनल रहल अछि।

अति प्राचीने कालसँ एहि कालजयी कथाक अनुलेखन पूर्णत: किंवा खण्ड रूपमे होइत आबि रहल अछि। भारतवर्षक एहन कोनो साहित्य नहि अछि जाहिमे एहि कथाक चर्चा-अर्चा नहि भेल हो। संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंशसँ लऽ कऽ विभिन्न आधुनिक भारतीय भाषा सभमे रामचरितक अनुगमन होइत रहल अछि, रामायण ओ अन्य विधाक काव्य- रचना होइत रहल अछि। नहि केवल भारतीय अपितु कतोक विदेशी भाषामे सेहो रामचरितसँ संबद्ध काव्यक प्रणयन होइत रहल अछि। विभिन्न कवि द्वारा एके कथा ओ एके चरितक पुनः पुनः आवृत्ति आन कथा ओ चरितक हेतु भने अनसोहाँत बुझल गेल मुदा रामचरितक आवृत्ति 'तिल तिल नूतन स्वरूपमे' अवतरित होइत रहल अछि आ लोकमानसकेँ परितृप्ति प्रदान करैत रहल अछि। संस्कृतमे तँ एकटा उक्तिये प्रसिद्ध भऽ गेल अछि जे

स्वसूक्तानां पात्रं रघुकुलतिलकमेकं कलयितुं
कवीनां को दोषः स तु गुणगणानामवगुण: ॥

अर्थात् ई रामेक गुणक अवगुण थिकनि जे कवि लोकनि अपन काव्यकृतिक

हेतु रामहिकेँ पात्र रूपमे चयन कऽ धन्य होइत रहल छथि।

रामकथा मर्मज्ञ तुलसी तँ एतऽ धरि कहि देने छथि जे

राम चरित जे सुनत अघाहीं

रसविशेष जाना तिन्ह नाहीं।

अपन रामकथा ग्रन्थ 'रामचरित मानस' मे ओ मंगलाचरण क्रममे ओहि समस्त कविकेँ प्रणम्य कहलनि अछि जे पूर्वमे की तँ रामचरितक अनुगायन कयलनि किंवा जे सम्प्रति कऽ रहल छथि वा भविष्यमे करताह। हुनकहि शब्दमे-

व्यास आदि कवि पुंगव नाना, जिन्ह सादर हरि सुजस बखाना।

चरन कमल बंदउँ तिन्ह केरे, पुरवहुँ सकल मनोरथ मेरे।

कलि के कबिन्ह करउँ परनामा, जिन्ह बरने रघुपति गुन ग्रामा।

जे प्राकृत कवि परम सयाने, भाषा जिन्ह हरि चरित बखाने।

भए जे अहहिं जे होइहहिँ आगे, प्रनवउँ सबहि कपट सब त्यागे।

विदुषी कवयित्री श्रीमती आभा झा प्रायः एही प्रणम्यताक लाभसँ मण्डित होयबाक लोभें 'बजितथि जँ उर्मिला' क माध्यमे रामकथाक अनुगायन द्वारा अपन स्वर्ण लेखनीकेँ अमल करबाक दिशामे सुष्ठु प्रयत्न कयलनि अछि।

रामकथाक चरितनायक थिकाह मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम आ नायिका थिकीह सती शिरोमणि सीता, जनिका जनक नंदिनी, मैथिली, वैदेही, भूमिजा आदि अभिधानसँ जानल जाइत रहलनि अछि। मर्यादा पुरुषोत्तम राम आ सती शिरोमणि सीताक अविनाभाव योगेसँ रामकथा पूर्ण भेल अछि। वाक् ओ अर्थ जकाँ, जल ओ ऊर्मि जकाँ, सूर्य ओ चंद्र जकाँ, दिन ओ राति जकाँ, सरिताक दुइ कूल जकाँ, रेशमी दुकूलक दुइ गोट पाढ़ि जकाँ राम ओ सीता रामकथामे संपृक्त रहल छथि।

मिथिला आदिकालसँ भारतीय धर्म, सभ्यता, संस्कृति ओ इतिहासक विशिष्ट उपादानक निर्मितिमे अपन अवदान दैत रहल अछि। एहि प्रदेशक ई अन्यतम वैशिष्ट्य छैक जे रामकथाक चरितनायिकाक प्रसविनी यैह भूमि रहल अछि आ अखिल भारतीय स्तर पर ई तीर्थक्षेत्रक रूपमे प्रख्यात रहल अछि। मुदा मध्यकाल धरि मैथिलीमे रामकथापरक कोनो निविष्ट ग्रन्थ रचल नहि जा सकल। तकर कारण इहो मानल जाइत रहल अछि जे मिथिलामे ई उक्ति प्रशस्त रहल जे

सीताक जन्म विरोगहि गेल

दुःख छोड़ि सुख कहियो नहि भेल।

विदेह तनया जानकी विवाहोत्तर कालमे पतिपरायणा होइतहु बेर- बेर वनवासक हेतु बाध्य भेलीह आ अन्ततः

जाहि भूमिसँ बाहरि भेलि

से पुनि पलटि ततहि चलि गेलि।

मिथिलाक जनमानस अपन दुहिताक ओहन गतिसँ मर्माहत रहल आ मैथिलीक साहित्यकार लोकनि रामकथाक प्रणयनक प्रति अनुत्साहित रहलाह।

मैथिलीक आद्यग्रन्थ वर्णरत्नाकरमे रामायणक सातो काण्डक उल्लेख टा भेल अछि। महाकवि विद्यापति सीताक कथाकेँ एक गोट पदमात्रमे अनुगुम्फित कयलनि। मिथिलेतर प्रान्तमे अवश्य किछु नाटकक प्रणयन सीता-राम पर आधारित भेटैत अछि, मुदा मध्यकाल धरि राममक्तिक प्रवाह अत्यन्त परिमिते रहत। यैह कारण छल जे प्रसिद्ध समालोचक आचार्य रमानाथ झा मैथिली साहित्येतिहासक विवेचन करैत एकर दुइ गोट काल मानलनि - कृष्णकाव्यकाल ओ रामकाव्यकाल। ओ मध्यकाल धरि कृष्ण काव्येक परम्पराक प्रसार देखलनि आ ओहि काल धरिक काव्यकेँ कृष्णकाव्य- परम्पराक काल कहल। आधुनिक कालकेँ ओ रामकाव्य परम्पराक काल कहने छथि। यद्यपि हिनक ई काल विभाजन एहि हेतुएँ मान्य नहि रहि सकल जे मैथिली साहित्येतिहासक आदिकालेसँ अधुनातन काल धरि कृष्णकाव्य ओ रामकाव्यक समानान्तर शैव काव्य ओ शाक्त काव्य धारा प्रवाहित रहल अछि।

मैथिलीमे रामकाव्यक परम्परा आधुनिक कालक देन थिक। युगप्रवर्तक चंदा झाक मिथिला भाषा रामायणक प्रणयणक संगहि मैथिलीमे रामकाव्यक धारा अति प्रबल भऽ उठल। पछाति कविवर लाल दास, तेजनाथ झा, सीताराम झा, विश्वनाथ झा 'विषपायी', रमाकांत झा, खड्ग वल्लभ दास 'स्वजन', कृष्ण नन्दन सिंह, बैजू मिश्र 'देहाती', बैद्यनाथ मल्लिक 'विधु', छेदी झा 'द्विजवर', हीरालाल झा 'हेम', रवीन्द्र नाथ ठाकुर, भुवनेश्वर प्रसाद, आचार्य सुरेंद्र झा 'सुमन', उषा किरण खान, राजेंद्र लाल दास, प्रभु नारायण झा 'प्रदीप', रामसेवक ठाकुर आदि रामकथाधारित काव्यक रचना कएलन्हि। मिथिलाक सन्त परम्पराक कवि लोकनि मध्य लक्ष्मी नाथ गोसाञि, साहेब रामदास, रामस्नेही दास आदि सेहो

रामकाव्यकेँ समृद्ध बनौलन्हि । बीसम शताब्दीमे मिथिलाक लता सम्प्रदायक भक्त ओ सन्त कविलोकनि सीता- राम- विवाह-प्रकरणकेँ आधार बनाय प्रचुर भजन कीर्तनपरक रामकाव्यक रचना करैत गेलाह जाहिमे प्रमुख छथि -मोदलता, स्नेहलता, हरे कृष्णलाल दास, नेमलता, कदमलता आदि। एहि तरहेँ राम काव्यक आधार सुदृढ़ होइत चल गेल।

राम काव्यक एही अधुनातन धारामे प्रस्तुत काव्यकृति 'बजितथि जँ उर्मिला' एकटा नूतन आयामक संग प्रस्तुत भेल अछि, जाहिमे उर्मिलाक मुँहसँ रामकथाक लाथेँ हुनक व्यथाक चित्रांकन भेल अछि।

मिथिलामे सामान्यतः रामकथाक पारायण किंवा वाचनक आधार तुलसीकृत रामचरितमानसे रहल अछि । मुदा आब चंदा झाक मिथिलाभाषा रामायण ओ लाल दासक रमेश्वर चरित मैथिली रामायणक पारायण होएबाक सूचना सेहो भेटल अछि जकर आरम्भ एहि दुनू महाकविक जन्मस्थल पिंडारुच ओ खड़ौआसँ भेल अछि। तथापि तुलसीकृत रामचरितमानसेक दोहा चौपाइक उद्धरण दऽ कथावाचक लोकनि राम कथा कहैत देखल जाइत छथि। ई कथा वाचक लोकनि कथा आरम्भ करबासँ पूर्व नमस्क्रियाक रूपमे एकटा पदक प्रयोग करैत देखि पड़ैत छथि-

सिया माण्डवी उर्मिला श्रुतकीरति वर वाम।
चारु कुंवर चारू कुंअरि तुलसी करथि प्रणाम।

यद्यपि रामकथा प्रकरणमे सीताक संगहि संग विवाह होयबाक अतिरिक्त अधिकांश रामकथामे सीताक तीनू बहिनिक चर्चा नहिञेक बरोबरि अछि । विश्वनाथ झा 'विषपायी' अवश्य सीतारामक वैवाहिक प्रकरणक सविशेष वर्णनक बाद उर्मिला, माण्डवी ओ श्रुतकीर्तिक विवाहकेँ संकेतित करैत कहने छथि -

पुनि उरमिला जनकक धीआ, देवसुता सन अति रमणीया।
तिनक विवाह लखन केर संग, लखि सब जन गन भेल उमंग।
जनक अनुज कुशध्वज छल नाम, अधिपति संकाशक बलधाम।
माण्डवि श्रुतकीरति दू बेटी, छविमे सुरबालो रह चेटी।
भरत शत्रुहन सँग विवाह, देखि विश्व में मोद अथाह।

(राम सुयश सागर, पृ. 91)

स्वभावतः कहल जा सकैत अछि जे सीताक ऐश्वर्यक प्रति अभिभूत रचनाकार लोकनि उर्मिला, माण्डवी ओ श्रुतकीर्तिक चरित्रक विशदताकेँ उपेक्षिते रखलनि

जखन कि हिनको तीनूक चरित्रमे त्याग, तप, स्नेह, सौख्य, पीड़ा, करुणा आदिक उत्कर्ष उपर्युपरिये छलनि। सीताकेँ तँ राम वनवासक अवधिमे दीर्घ कालावधि धरि पतिक सान्निध्य प्राप्त रहलनि मुदा उर्मिला तँ राम वनवासक सम्पूर्ण अवधिमे प्रोषितपतिके बनलि रहलीह। माण्डवी तपस्वी भरतक ओ श्रुतिकीर्ति तीन-तीन गोट सासुक सेवाव्रती बनलि रहलीह। तेँ एहि तीनू वामाक आदर्श चरितक वैलक्षण्य सेहो अनुगेय रहितो ओ गौरव प्राप्त नहि कऽ सकल जकर ई तीनू अधिकारिणी छलीह।

कवयित्री आभा झा एहि तीनू चरित्रमेसँ उर्मिलाक चयन कऽ मैथिली साहित्यक एहि अभावक पूर्ति दिस अग्रसर होयबाक कारणेँ संवर्द्धनीया थिकीह।

रामकथासँ उर्मिलाक चरित्रक चयन कऽ प्रबंधकाव्यक रचना दिस कवयित्रीक प्रवृत्तिक जागरणमे मैथिलीशरण गुप्त रचित 'साकेत' महाकाव्य प्रेरक रहल होयत से सहजहिँ उह्य थिक। एहिसँ कवयित्रीक बहुश्रुत होयबाक अनुमान कयल जा सकैत अछि। ओना 'कवि उद्भ्रान्त' कृत 'त्रेता' महाकाव्यक मैथिली अनुवाद श्री जीतेन्द्र मिश्र 'अनिल' द्वारा प्रकाशित कराओल गेल अछि जाहिमे बारहम सर्गमे उर्मिलाक कथा अनुस्यूत अछि। तदनुसार विवाहोत्तर उर्मिला अपन प्रियतम लक्ष्मणक संग सासुर अयोध्या आबि जाइत छथि। युवावस्थाक उमंग- तरंगमे ओ लक्ष्मणक प्रति अनुरक्त छथि। अनुवादकक शब्दमे हुनक चित्र लक्ष्मण रूपी चन्द्रक दर्शन हेतु चकोर बनल अछि -

आ जकर चित्र चकोर जकाँ
केन्द्रित रहैत हुनक
दर्शन चन्द्रहि दिस प्रत्येक क्षण।

मुदा लक्ष्मण अपन ज्येष्ठ भ्राता रामक मर्यादाक संरक्षणमे तेना भऽ कऽ लीन रहऽ लागल छलाह जे हुनका उर्मिलाक प्रति कोनो खास ध्यान नहि रहैत छलनि-

नहि किंचित् ध्यान रखैत जे
एकटा सुन्नरि नव स्त्री
उरकेँ भेटल
हुनकर उरसँ सम्पूर्णतः यथार्थमे
हुनक अर्द्धांगिनी बनि कए अयोध्यामे।

पछाति राम-वनवासक आज्ञा भेला उत्तर सीता तँ रामकेँ संग लऽ चलबाक

हेतु मनयबामे सफल भऽ जाइत छथि, मुदा उर्मिला जखन लक्ष्मणक संग चलबाक प्रस्ताव रखैत छथिन तँ एकनिष्ठताक प्रति प्रतिबद्धता देखबैतो लक्ष्मण उर्मिलाकेँ संग चलबाक स्वीकृति नहि प्रदान करैत छथिन आ हुनका चौदह वर्ष धरि प्रतीक्षारत रहबाक आज्ञा दऽ दैत छथिन। उर्मिला अकबकायले रहि जाइत छथि आ लक्ष्मण हुनक कक्ष सँ बाहर भऽ जाइत छथिन। वनवासक हेतु भाइ ओ भाउजिक सँग लक्ष्मणकेँ देखि उर्मिला गह्वरित भऽ जाइत छथि, हुनक नयनमे नोर भरि अबैत छनि। चौदह वर्ष धरिक पतिक प्रतीक्षा हुनका कुण्ठित कयने रहैत छनि। एहि कुण्ठाजन्य व्यथाक तुलना उर्मिला सीताक ओहि व्यथासँ करैत छथि जखन सीता रावण द्वारा अपहृता भऽ अशोक वृक्षक नीचाँ पतिक स्मरण करैत बितौने छलीह। उर्मिलाक एहि चिन्तनमे पतिक प्रति हुनक अनन्य प्रेमक निदर्शन भेटैत अछि। विरहविदग्धा एहि नायिकाक स्थिति आर जर्जर तखन भऽ जाइत छनि जखन हुनका ज्ञात होइत छनि जे हुनक प्राणप्रिय मेघनादक बाणसँ मूर्च्छित भऽ गेल छथिन। एहनो स्थितिमे ओ अपन कातरता नहि अभिव्यक्त करैत छथि आ एतबे सोचैत रहैत छथि जे हमरा मौन नहि रहि आर बेसी आग्रह कऽ वनमे संग जयबाक उद्योग करऽ चाहैत छल। प्रीतिक ई पराकाष्ठा उर्मिलाक चरित्रकेँ अत्यन्त पावन बना देलकनि अछि।

मैथिली साहित्यमे आभा जीसँ पूर्व जे रचनाकार उर्मिलाक चरित्रांकन दिस अग्रसर देखि पड़ैत छथि से थिकाह रमाकान्त झा। हिनक रामायणीय कथाधारित प्रबन्धकाव्य 'व्यथा' अत्यंत प्रख्यात अछि। एहिमे रामक वनगमनक प्रसंगकेँ वस्तु रूपमे ग्रहण कयल गेल अछि तथा नहि केवल उर्मिला, माण्डवी ओ श्रुतकीर्तिक चरित्रक उत्कर्ष दर्शाओल गेल अछि अपितु कैकेयीक चरित्रकेँ सेहो उदात्त स्वरूपमे व्याख्यात कयल गेल अछि।

एहि प्रबन्धकाव्यमे उर्मिलाक अत्यन्त उदार चरित्र प्रस्तुत भेल अछि। ओ नहि केवल लक्ष्मणक वन प्रस्थानमे सहयोगिनी बनैत छथि, अपितु चौदह वर्षक दीर्घ अवधि पर्यन्त व्रती जीवन बितयबाक प्रतिज्ञा सेहो करैत छथि। परिवारक कल्याणक बलिवेदी पर ओ अपन दाम्पत्य जीवनकेँ उत्सर्जित कऽ भारतीय पारिवारिक जीवनक गरिमा ओ आदर्शकेँ प्रक्षेपित कयलनि अछि -

सहयोग मूलक भावना अछि पारिवारिक नियम पर
दाम्पत्य जीवन अछि हमर आदर्श पावन उच्चतर।

रमाकान्त झा अपन एहि काव्यमे रामकथाक उपेक्षिता अन्य पात्रीद्वय क्रमशः

माण्डवी ओ श्रुतकीर्तिक चरित्रकेँ सेहो उपेक्षाक दंशसँ बचयबाक प्रयास कयलनि अछि। एहि हेतु हुनका नूतन मिथकक सृजन करऽ पड़लनि अछि। रामकेँ वनगमनक आदेश भऽ जाइत छनि। ओ सीता- लक्ष्मण सहित वन जेबा पर आतुर छथि। माण्डवी ओ श्रुतकीर्तिक वर अयोध्यामे नहि छथिन। ओ दुनू गोटे भरतक मामा गाम गेल छथिन। माण्डवी आ श्रुतकीर्ति सोचैत छथि जे जँ ओ दुनू रामक वनगमनक प्रतिकार नहि करतीह तँ लोकमे अपवाद पसरि सकैत छैक जे हिनको दुनूक वर आ इहो दुनू षड्यंत्रमे शामिल छलीह जकर कारण रामक वन गमनक परिवेश बनलैक। तेँ ओ दुनू अयोध्याक मुख्य फाटक पर जा कऽ ओकरा सामने पड़ि रहैत छथि जाहिसँ मैथिल परंपरानुसार भैंसुर होयबाक कारणे राम हुनका लोकनिक अवहेला कऽ फाटक पार नहि कऽ सकथिन। अंततः हुनका लोकनिक हठधर्मिताकेँ तोड़बाक हेतु रामकेँ अपन विराट स्वरूपक दर्शन करबय पड़ैत छनि। तखन ई दुनू बाट छोड़ि दैत छथिन आ रामक वनगमन सम्भव भऽ पबैत छनि।

वस्तुत: रामकथा किंवा रामायणमे सीता सदृश वटवृक्ष तर दबिकऽ हुनक तीनू बहिन क्रमशः उर्मिला, माण्डवी ओ श्रुतकीर्तिक चरित्र पल्लवित नहि भऽ सकलनि अछि, मुदा अछि ई सभटा उपेक्षित चरित्र सभ क्रमशः उपर्युपरि -'को बड़ छोट कहत अपराधू'।

उदाहरणक लेल एकटा अत्यन्त लोकप्रिय गीत पर ध्यान देल जाय

प्रथम परण सिया ठानल सेहो विधना पूरल रे
ललना रे, पाओल कौशल्या सन सासु, ससुर राजा दशरथ रे।
दोसर परण सिया ठानल सेहो विधना पूरल रे
ललना रे, पाओल अयोध्या सन राज, जनकपुर नैहर रे।
तेसर परण सिया ठानल सेहो विधना पूरल रे
ललना रे, पाओल राम जी सन पुरुष देवर बाबू लछुमन रे।

सीता पर आधारित ई गीत लगभग सीताक आनो तीनू बहनक हेतु यथार्थपरक अछि। मुदा रचनाकार अपन रचनामे में सीतहि टा केँ प्रधानता देलनि, आन तीनू बहिन अव्यक्ते रहि गेलीह।

प्रस्तुत कथाकाव्य 'बजितथि जँ उर्मिला' रामकथाक एक गोट विशिष्ट पात्रीक कल्पनाप्रसूत व्यथा-कथा पर आधारित अछि। एहिमे उर्मिलाक माध्यमे रामकथाक वाचन कराओल गेल अछि। अत्यन्त संक्षिप्त होइतहुँ ई काव्य सहृदय

हेतु मर्मस्पर्शी अछि आ ब्रह्मानंद सहोदरक भुक्तिक संगहि भवरोगसँ मुक्तिक सुसेव्य संसाधन अछि। ई काव्य आभा झाकेँ अपन दिव्य ओ भव्य संस्कृतिक संरक्षिकाक रूपमे अवश्य प्रतिष्ठापित करतनि।

मातृदेवी मैथिलीक शृंगार हेतु प्रस्तुत ई पुष्प चंदा झाक एहि वाणीकेँ अवश्य चतुर्दिक् मे गमगमबैत रहत से अपेक्षे नहि विश्वासो -

भवति भवतु लोके सत्कथाया: प्रचारो
जनकनृपतिपुत्री मातृभाषाञ्चिताया:।
अन्तमे साशीराशि:- 'वर्धस्व राष्ट्रं विमलीकुरुष्व'।

– योगानन्द झा
कबिलपुर, लहेरियासराय,
दरभंगा

भावाञ्जलि

एहि धरती पर जाहि कोनो प्राणीक अस्तित्व छैक, निस्संदेह प्रकृतिमे ओकर उपयोगिता छैक। ई फराक गप जे किछुक अवदान दृष्टि पथमे अबैत छैक आ किछुक जीवन यात्रा लोकदृष्टिसँ उपेक्षित रहि जाइत छैक। फूल-फलसँ लदल लहलहाइत गाछ त' सभ देखै छै, मुदा बीआक माटिमे विलीन होयब नजरिसँ ओझल भए जाइत अछि। संगहिँ ओहि मालीक अवदान सेहो विस्मृत भए जाइत छै जे ओहि बीआक अंकुरणमे, पौधक सुरक्षामे आ बढ़बाक अवसरमे सहायक रहल। तेँ की ओकर महत्त्व नहि? महत्त्व मात्र वाचिक नहि होइत छैक, ओ होइत अछि कर्ममय आ ओ संसारक सभ प्राणीक अछि। कहलो गेल अछि -

अमन्त्रमक्षरं नास्ति नास्ति मूल मनौषधम्

अयोग्य: पुरुष: नास्ति योजकस्तत्र दुर्लभ:।

एहि योजक गुणक स्वीकार्यताक क्रममे इहो स्मरणीय जे हमर दृष्टि केम्हर जाइत अछि, हमर रुचि-प्रवृत्ति हमरा कोन दिसि आकर्षित करैत अछि, हमरा लेल की उपयोगी अछि, हमरा कथीक चर्चा पसिन्न अछि? एकटा प्रेमीक दृष्टि प्रेमिकाक यौवन आ सौंदर्य दिसि जाइत छैक, त' एकटा चिकित्सकक सुन्दर देहक भीतर जड़ि जमौने रोग दिसि। एकटा कवि गुलाबक वर्णनमे सार्थकताक अनुभव करैत अछि त' दोसर पतबिछनीक पीड़ामे, एकटा अर्जुनक साहस-शौर्यक प्रशंसामे त' दोसर कर्णक अन्तस्तलक आक्रोशमे, एकटा सौभाग्यक मधु मदिर संयोग-रसक उद्रेकमे त' दोसर वैधव्यक एकांत शोकमे। कहलो गेल अछि - 'भिन्नरुचिर्हि लोक:'।

एकटा मुदा सर्वस्वीकार्य तथ्य छैक जे प्रसिद्ध लोकक महत्ताक वर्णन-क्रममे ओहिसँ सम्बद्ध इतरजनक उपेक्षा भइए जाइत छैक। सीमा पर लड़ैत अछि सैनिक, प्राण उत्सर्ग करैत अछि सैनिक, परिवारक लोक वंचित होइत छैक ओकर, मुदा नाम होइत छैक कमाण्डेंट केर, ई सत्य थिकै।

बहुत पहिने गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर 'काव्येर उपेक्खिता' शीर्षकसँ एकटा लेखक माध्यमसँ साहित्यकारक आह्वान केलनि आ ओहि आह्वानकेँ ध्यानसँ

सुनलनि कविवर मैथिली शरण गुप्त। परिणामस्वरूप साकेत, यशोधरा आ विष्णु प्रिया सन पोथी पाबि पाठक सनाथ भेल। तकर बाद बहुत कवि- लेखक काव्यक मुख्य पात्रक संग गौण पात्रक मनोभूमि तक पहुँचबाक चेष्टा कएलनि आ सफल भेलाह। मैथिलीओ मे पद्मश्री उषा किरण खान भामती लिखि एहि क्रमकेँ समृद्ध कएलनि अछि।

'सीताक स्वरक' बाद हमरा म'नमे हुनक बहिन उर्मिलाक ऊहापोह उपज' लागल छल। मोन होइत छल किछु लिखल जाय, किन्तु आधार- सामग्री त' अत्यल्प, तखन की बनि पेतै किछु काजक चीज ? हेतै त' हिनको सँ सम्बद्ध बहुत रास सामग्री, किन्तु अल्प पठित हमर दृष्टिमे मात्र 'साकेत' आयल छल। त' किछु गुप्त जीक दृष्टि आ किछु अपन कल्पना दुहू मिलि जे काव्यरुप लेलक, ओ एहि दीर्घ कविताक रूपमे प्रस्तुत करक साहस कए रहल छी। संस्कृतक विद्यार्थी छी, तेँ वाल्मीकि रामायणक आ भासक प्रतिमा-नाटकक किछु छाँह एतय देखाइ पड़ि सकैत अछि।

एकटा गप आओर हमरा म'नकेँ उद्वेलित करैत रहल अछि। ओ अछि एकटा बच्चाक दोसर बच्चासँ तुलना, एककेँ पानक पात जकाँ फेरब आ दोसरकेँ मखानक पातसँ। एकटा शिक्षिकाक रूपमे स्वाभाविक रूपसँ बहुत रास छात्र-छात्रासँ संपर्क होइत रहल अछि आ रहरहाँ ओकर कुण्ठित मनोदशाक अनुभव सेहो भेल अछि। कोनो परिवारमे एकटा बहुत मेधावी किम्वा बहुत सुंदर बच्चा सभक प्रशंसाक भागी होइत अछि, जे स्वाभाविको। मुदा कोनमे ठाढ़ सामान्य, अल्पबुद्धि वा असुंदर बालकक मनक अन्तर्द्वन्द्व दिसि बहुत कम लोकक नजरि जाइत छैक। बेशी काल माता-पिता सेहो नहि बूझि पबैत छथि ओकर मन: स्थिति आ बिनु बुझने मुँहसँ किछु एहन बहरा जाइत छनि जे बच्चाक कोमल मस्तिष्ककेँ आहत कए दैत छैक।

म'नमे इहो आयल जे की उर्मिला सेहो किछु एहनाहे नहि सोचैत होयतीह! जे से, जँ ओ बजितथि त' की बजितथि, ई कल्पना-संवलित हृदयोद्गार अपने लोकनिक समक्ष अछि। नीक बेजाय जे बनि सकलै, सहृदय पाठकवृन्दक दृष्टि निक्षेपक आ समालोचनाक अपेक्षा त' सहजे कि ने!

सर्वप्रथम एहि पोथीक पहिल ड्राफ्ट पढ़ि हमर मनोबल बढ़ौलनि परमादरणीय श्री भीमनाथ झा जी। हुनका प्रति अपन विनम्र कृतज्ञता ज्ञापित करैत एकटा आश्वस्ति

सेहो संग रहैत अछि जे हुनक मार्गदर्शन सदति हमर लेखनक परिष्कार करैत रहत। एहि लघ्वाकार पोथीकेँ गुरु-गंभीर भूमिकासँ सज्जित कए पोथीक मोल बढ़ौनिहार, तत्सम्बद्ध ग्रन्थादिक वैशिष्ट्यसँ पाठकवर्गकेँ लाभान्वित कएनिहार आदरणीय श्री योगानन्द झा जीक प्रति हृदयतलसँ आभार व्यक्त करैत छी। अपन व्यस्ततम समयमे ई पोथी पढ़ि ओहि पर हुनक मन्तव्य आ शुभाशंसा हमरा लेल सहज सुलभ भेल, तेँ आदरणीयक प्रति आभार- विनत छी। हमरा सन अति साधारण लोकसँ अत्यल्प परिचयकेँ सहज सम्वादक परिचिति धरि पहुँचयबामे आदरणीय श्री विनोद कुमार झा आ आदरणीय लेखक श्री रमेश प्रमुख सेतु बनल रहलाह। हम हिनकर दूहूक निर्व्याज आत्मीयताक ऋणी छी।

पोथीक एहि वर्तमान कलेवर लेल युवा मैथिली अनुरागी सम्पादक श्री उज्ज्वल कुमार झाकेँ हुनक सुरुचिपूर्ण सहयोग लेल धन्यवाद।

सहृदय पाठकवृन्द धरि ई क्षीणकलेवरा पोथी पहुँचय आ हुनक आशीषसँ अभिसिंचित भ' सकय, ई मनोरथ त' अछिए।

– आभा झा

बजितथि जँ उर्मिला

मातृ कुक्षिमे शिशु अबैत अछि
नहि निज इच्छेँ, प्रकृति हेतु अछि
ब्रह्म चराचर केर लघु अणु बस
सृष्टि नदी केर बनल सेतु अछि।

किन्तु मनुज बस निज विवेकसँ
बनल फराक समस्त जीवसँ
हर्षित सुखसँ तप्त कष्टसँ
रचइछ सृष्टि सुनीति-नींवसँ।

आन जीव बस सुख- दु: ख
भावेटा सँ, व्यक्त करै ई तथ्य
अश्रु धेनु केर, कानब श्वानक
पीड़ा किन्तु न प्रकटित कथ्य।

अभिव्यक्तिक अछि शक्ति मनुज लग
भाव- रसक सम्प्रेषण शक्य
निज-पर-करुण लेप शब्दोसँ
संभव, नहि अनका ई लभ्य।

तदपि मनुजमे भेद बहुत अछि
वृत्ति गुणेँ ओ पाबय मान
हित समष्टि जे त्यागय निजसुख
कालातीत ओकर सम्मान।

अपनहि टा सुखकेँ कए आगाँ
परपीड़ामे जँ नहि रोच
दस्यु ओकर आख्या जे बूझय
शोषणमे नहि कोनो दोष।

नहि विदेह अज्ञात न रघुकुल
कीर्तिलताक पसारे कम
दूहू वंशक कथा कहै अछि
भोगक नहि, तप त्यागक दम।

मर्यादा सभतरि स्थापित हो
एक नियम हो नृप वा रंक
निज जीवन भए जाउ होम बरु
शील पद्म सम माँझहु पंक।

जे समाज कल्याणक वेदी
पर निज सुख कएलनि उत्सर्ग
युग पर युग बीतय बरु तनिकर
अमल यशक कायम उत्कर्ष।

एतय किन्तु प्रख्यात न छथि जे
टोही हुनको मनकेँ आइ
राजभवन नहि, अन्त:पुर-
वासिनीक मनमे की औनाइ?

बजितथि जँ उर्मिला, मांडवी
श्रुतकीर्तिक मुँह फुजितनि स्यात्
की कहितथि ओ?आ कि आइयो
चुप्पे मुँह सहितथि अभिघात।

प्रथित कथा तजि, घटनाकेँ
आधार बना देलहुँ अछि शब्द
आलोड़न उर्मिला-उरक सुनु
यदपि गेल बिति बहुतो अब्द।

हम सुनयना, जनक केर
औरस सुता छी उर्मिला
प्रथम पुत्री होइतहुँ
छी ख्यात हम सीतानुजा।

गाछ निच्चाँ बरगदक
द्रुम पादपक अस्तित्व की
नहि बढ़ै क्षमतानुकूले
दृश्यता नहि भाग ई।

मिथि- भूमि अयली जखन सीता
वृद्धि भेल सुख-सम्पदा
वृष्टि समुचित, आर्द्र धरती
खेत सभ शस्यप्रदा।

तेँ पिता केर प्रियतमा
छलि मैथिली पुरजनप्रिया
दिव्य सुन्दर देखि छवि
सभ क्यो जुड़ाबै छल जिया।

दुहिता विदेहक यदपि हम
तैंयोँ न अभिधा जानकी
शब्द ओ दीदीक हित
विख्यात, हम्मर मान की ?

चञ्चला हम ओ गभीरा
ज्ञान, गुण केर खान ओ
जननि- जनकक पुरजनक छलि
आन आ अभिमान ओ।

माण्डवी श्रुतकीर्ति केर
नहि न्यून छल गुणसम्पदा
पितृव्य-पितृव्याक सभसँ
प्रिय छलीह दीदी मुदा।

बाल्यमे नहि बूझि पाबी
की थिकै कारण एकर
पूर्णचन्द्रक सामने द्युति
तारकक लक्षित ककर ?

कलकल जेना धारा बहै
छलछल करै मम भावना
खनहि काकी, वा कि माता
ध्यान केर बहु कामना।

हम तीनुकेँ भेटै छलै
अवधान नहि ककरो मुदा
विषय गप- शप होइ छलै
दीदीक गुण निधि सर्वदा।

दीदीक मनमे नहि छलनि
कोनो विधिक दुर्भावना
जेठि बनि, दायित्व सबहक
ओ निमाहथि आत्मना।

नोर ककरहु आंखिमे
नहि देखि सकइत छलि बहिन
कारण करै छलि दूर ओ
अति शीघ्र, हो कतबो कठिन।

स्नेह निधि अक्षय बहय
दीदीक हमरा हित सदा
चर्चा सभक मुख सुनि हुनक
उर हमर कचकै छल मुदा।

पैघ भय बुझबाक अवगति
भेल वस्तुस्थिति जखन
दीदीक प्रति समवेदना
स्नेहक फुटल निर्झर तखन।

बाल्यकाल होइछ परन्तु
जीवनक स्वर्णमय काल खण्ड
के अपन आन के बोध कतए
नहि मन ककरहु ईर्ष्या प्रचण्ड।

ओ वयस जीवनक छल अनुपम
आनन्द जलधि सभ आप्लावित
चारू बहिनी नव वस्त्र वा कि
छोटहु उपहारेँ आह्लादित।

आह! छलै अद्भुत ओ जीवन
भेदमुक्त उर निश्छल
खनहि नोर- तीतल कपोल छल,
खनहि हँसीसँ निर्मल।

तप:पूत पिताक संरक्षण
सुशिक्षण गुरुजनक,
जननि केर व्यवहार शिक्षा
सबल करइत तन-मनक।

शस्त्र- शास्त्रक ज्ञान संग
गृहकार्य अवगति भेल सभ
बचल समयेँ मिलि सखी
उन्मुक्त खेली खेल सभ।

मोन होमय जा बगैचा
पुष्प सुंदर लोढ़ि आनी
संग दीदी वस्त्र पर हम
भांति- भांतिक चित्र काढ़ी।

खेलमे जँ पकड़ि तितली
बन्न कए दी आनि शीशी
बरजि क' एहि कृत्यसँ
बुझबथि सदय प्रिय हमर दीदी।

पढ़ब, लीखब खेल खेलब
चारु बहिनी संग केलहुँ
सहज प्रकृतिक कोरमे
निश्चिन्त हम सभ पैघ भेलहुँ।

समय केर धारा बहै छल
शान्त शीतल मोदमय
किन्तु असमय जनक एलथि
मन्दिरक मार्जन समय।

शिवधनुक सन्दूक एहि क्रम
हाथमे दीदी उठेलनि
जनक अजगुत देखि तत्क्षण
वाक् परिणय निकष देलनि।

पूर्व एहिसँ अतुल शक्तिक
नहि पिताकेँ थाह
करब जामाता धियासँ
श्रेष्ठ, आन्तर चाह।

श्रेष्ठता नहि लिङ्गसँ स्वीकृत
'अहम्' जागृत मुदा
पुरुष मनमे भाव ई
रक्ष्या सुकोमल स्त्री सदा।

स्त्री मनक किछु भाव से
प्रतिबल पुरुषकेँ वरि सकी
नहि सुकोमल, वीर भर्त्ता
प्रिया भार्या बनि सकी।

जानि नहि ई धारणा पैसल
समाजक म'न केना
कृतयुगक अथवा कि त्रेता
संक्रमण- फल हो जेना।

स्त्रीक धर्मक स्त्री चरित्रक
सगर चर्चा छल मुखर
उभय शीलक, भद्र जनमे
पृथक् मानक छल प्रखर।

किन्तु नहि ई बोध तहिखन
हेतु अन्वेषण करी
गुरु, पिता, माता कि काकी
संग मिलि मंथन करी।

उत्सुक छलहुँ हम सभ बहिन
सीता-विवाहक हित सदा
जय माल्यसँ सज्जित होयत
नहि जानि केहि वर केर गला।

मोदमे डूमल छलहुँ
ओ ई करत हम ई करब
सौख सभ टा सारि केर
हम तीनु बहिनी मिलि करब।

हमहीं कियै सीताक उद्वाहक
सभक चिन्ता विषम
के चढ़ा कए चाप शिव-धनु
करत आनन्दित परम।

सीताक कर केर लालसा
नरपति जनक नहि शम्य
पाणि ग्रहणक निकष
धनुसंधान तेँ की शक्य ?

राम कएलनि काज ई
यद्यपि चढ़ल नहि चाप
खण्डित उठबितहि दिव्य धनु
सहि शौर्य विक्रम ताप !

जयघोष भेल सर्वत्र
कोमल कान्त वीरक सिद्धि
जयमाल वर केर कण्ठ
सीता सङ्गसँ सभ ऋद्धि।

किन्तु परिणय बेरमे पुनि
विषमता द्विगुणित भेलै
सिउथ सेनुर चारि बहिनक
स्वयंवर- सीता छलै।

एक बेर पुछितथि पिता
नव जीवनक शुभ काल
हुनक इच्छासँ सजबितहुँ
अपन भाग्यक भाल !

गौरव न एतबहु प्राप्य
कन्या की न हम हुनकर छलहुँ
राजकुँवरिक एहन परिणय
स्वप्न नहि देखने छलहुँ।

केन्द्रमे सीता सदति
वेला सकल अति हीन हम
नहि स्वयंवर, नहि वरेच्छा
चढ़ल मंडप दीन मन।

जानि नहि अवधक विभव लखि
वा सुदर्शन कुँवरगण
प्रस्ताव नृप केर पिता काका
मुदित भए कएलनि वरण।

न्यूनता किछुओ छलै नहि
शौर्य विद्या कुल अतुल
चारि वर मिथिला नगरमे
भव्य अनुभव, सुख प्रतुल।

हम, माण्डवी, श्रुतकीर्ति छी
विस्मित विमूढ़, न रोषमे
सुपुरुष भेटब सौभाग्य बुझि
काका-पिता परितोषमे।

सविधि- विधान विवाहसँ
आशा-मनोरथ सभ पुरल
उचित बेला जनकपुरसँ
चारि डोली चलि पड़ल !

छलै किछु दिन सुखद सरिपहुँ
नव वयस, नबका प्रणय
मृदु मधुर स्पन्दन हृदयमे
उभय दिसि स्वत्वक विलय।

निशा मधुमय, दिवा स्वप्निल
भाव अबूझ अनाम छल
एक नहि दूहू दिशा शर
तीक्ष्ण मार- विधान छल।

दू भिन्न जन सम्मुख अनल
सहजीवनक प्रणमे बन्हल
अन्यसँ बनलहुँ अनन्ये
अर्पणक सुख से बुझल।

प्रीति उपजल बादमे,
आशीष गुरुजन छल प्रथम
ई समाजक रीति छल
नहि प्रश्न क्यो उठबय तखन।

यद्यपि स्वयंवर छल प्रथित
नहि ताहिमे अपवाद
कन्या चुनय वर वा पिता
सौभाग्य टा अभिलाष।

स्वयंवर सीताक अथवा
जनक- प्रण प्राधान्यमे
ओहि निकष बल सिद्धता
वर वीर कन्या-भाग्यमे।

जन्मदाता करथि निश्चय
सुत-सुता हित छल प्रबल
आशीष गौरी संग तेँ वर
चारि, छल पितु पुण्य फल !

की कही ओहि समयमे
मधु ऋतु केहन जुड़बय जिया
बहिन सभ सुख-जलधि उबडुब
प्रेम- रस डूमल पिया।

स्मृति जनकपुर केर जखन
आबय हृदय होमय विकल
बहटारि ली सभ मोन, मिलि
किछु गप करी मन हो सबल।

सासु सभ सेहो सदय छलि
नहि कोनो बंधन विषम
स्पष्ट सासुर नैहरक अंतर
मुदा नहि छल अगम।

काल यापित होइ छलै एहि भाँति
नहि व्यवधान किछु
मधुर मादक नवल प्रेमक
नहि छलै उपमान किछु।

किन्तु सुख वेला क्षणिक
त्रुटि किछु समंधक मूल छल
किंवा विदा केर बेरमे
अतिशय प्रबल दिक्शूल छल।

त्याग-तप केर भूमिसँ
हम सभ विलासक पाँकमे
आबि असहज सन छलहुँ
यद्यपि छला प्रिय साथमे।

तीन पत्नी, एक पति
देखल न कहियो गाममे
एक टा छलि प्रियतमा
दुइ नाम केर अभिमानमे !

विचलित हृदय लखि हमर
प्रिय आश्वस्त कएलनि दय वचन
तजि अहाँ नहि अप्सरो
औती प्रतिज्ञा, मृगनयन !

बहुत किछु जे चलि रहल
छै उचित, मन नहियो बुझै
किन्तु गुरुजन पूज्य प्रति
किंचित् न प्रश्नक पल अबै।

हुनक जीवन, हुनक मर्यादा कि
औचित्यक निकष
छै जरूरी नहि कि हमहूँ
चलि पड़ी ओहि पर अवश।

हिय हमर आहाँक हिय संग
मिलि बनल समरूप
नैज भावक कए समर्पण
मन हमर अभिभूत।

प्रीति पावनसँ उरक प्रति कोनकेँ
अभिषिक्त कएलहुँ
नेह सम्पद् पाबि अतुलित
प्रियतमे ! सन्तृप्त भेलहुँ।

हृदय आसन अहिँ विराजब
वल्लभे! विश्वास राखी
शेष नहि कोनो तृषा
प्रिय उर्मिले! दिसि आन ताकी।

उपहार अनुपम पाबि पूरित
रोम रोम कृतज्ञता
जगत सगरो ख्यात
रघुकुल केर वचन प्रतिबद्धता !

सभ मुदित अति, नव उमंगक
वायु सिहकै छल सदा
श्वसुर सरिपहुँ बिसरि गेलथि
भेल की पहिने मुदा।

कर्म फल भोक्तव्य होइछ
प्रति मनुज एहि धाम
कएल भल अथवा कि अनभल
जानि वा अनजान।

भेल जे किछु पूर्व असहज
फल हेतै सुखमय कोना
बीजमे वैषम्य जँ
समता-फलक आशो कोना?

कर्म केर माहात्म्य जगमे
विज्ञ जन सदिखन बुझै
पाश माया फँसि कदाचित्
भाग्य-फल बुझि ओ भ्रमै।

विस्मृत होइछ कखनहुँ न भूत,
ओ वर्तमान शापित करइछ
पंकिल दूषित सरिताक लहरि
उर्वर भविष्य क्लेशित करइछ।

किछु काल- चक्र, किछु भाग्य- चक्र
ई नियति क्रूर किछु चालि चलै
तृण थिक मनुष्य, नहि दम्भ उचित
भावी समक्ष नहि दालि गलै।

अधिपति अवध विह्वल विकल
एहि बीच, गुनधुन मन अतल
राजसी सुख भोग नहि
संन्यास केर इच्छा प्रबल।

ऋषिजनक संग समय यापित
हम करी वार्धक्यमे
व्रत-नियम -निष्ठाक
हो व्यवहार तप-आधिक्यमे।

अभिषेक रामक हो अचिर
आभास ई नृपकेँ भेलनि
निज मनक शुभ भाव कहि
सहमति गुरुक सहजहिँ लेलनि।

छथि भरत दुइ भाइ नहि
एहि सुखद अवसर खेद अछि
योग राजक शुभ एखन
नक्षत्र- ग्रह- गति तेज अछि।

कियै भावुकताक कारण
स्वर्ण अवसर हम तजी
अभिषेक, मंगल आचरणमे
व्यर्थ देरी नहि करी।

विस्मित, मुदा सभ मुदित छल
नृप घोषणा सुनि राज्यमे
सत्त्व गुण सम्पन्न राघव
कुशल नय-नृप काजमे।

धड़फड़ीमे कएल निर्णय
नहि सुखद कहियो रहल
राम सन युवराज कोमल
काननक कष्टे सहल !

राम केर की दोष,
नृप केर कामना कारण बनल
ओहि निमीलित नयन वचनक
कुफल सुत परिजन सहल !

एकटा कारण न केवल
श्राप सेहो संग छल
किन्तु ओत्तहु दशरथक
अविवेक हत्या-हेतु छल !

राम सन सुत, एक छनमे
वनक हित प्रस्तुत भेलाह
रोष नहि, आमर्ष नहि
हँसि विधिक लेखा पढ़ि गेलाह !

आइ धरि रघुवंशमे कर्त्तव्य
जे नहि क्यो कयल
आइ पितु आज्ञाक ब्याजेँ
धर्म पथ पग बढ़ि चलल।

राम मुख नहि रोष वा
किञ्चित् निराशा केर घटा
सुख दु:ख बुझथि सम धीर ओ,
छनि त्याग केर अद्भुत छटा !

आब बचला, लखन जे
क्षण एक नहि अग्रज विलग
वार्ता न चर्चा किछु मुदा
अभ्यस्त पग पाछाँ चलल !

कोन तरहक छल प्रणय
नहि बूझि पौलहुँ आइ धरि
स्वल्प दिन केर ज्योत्स्ना
आ चिर अमा कै वर्ष भरि !

पाणि गहलनि प्रेमसँ
एहि बोधसँ गदगद भेलहुँ
किन्तु ओ सेवाक 'समिधा'
भस्म हम होइत गेलहुँ।

पूछि कय निज धर्मपत्नी
कोन पति निर्णय कएल
एकान्तमे किछु कहि सकी
खगता न पति प्रियतम बुझल।

प्रेम नहि कएलनि कहब ई
पूर्णतः होयत मृषा
ओ निशा मधुमय, समर्पण
उभय दिसि बढ़बय तृषा !

मनुज नहि संतोष पाओल
प्रेमसँ एहि ठाम
नित बढ़य नवताक इच्छा
अपरिमित उद्दाम।

अतल डूमल एहि जलधिमे
हम निरखिते चांदनी
हन्त!हा!पसरल नगर संग
हमर जीवनमे तमी !

मोदमे डूमल नगर छल
राज भेटतनि रामकेँ
नहि जनै छल क्यो
निदारुण दृष्टि बिधना वामकेँ।

एक क्षणमे गगनसँ
भू पर खसक पीड़ा विषम
राघवक परिधान वल्कल
भाग्य केर खेला अगम।

उत्फुल्ल प्रियतम छलथि तखनहिँ
क्षणमे छनाकक स्थिति विषम
क्षत्रिय सहै अन्याय नहि
भाग्यक न बूझै गति अगम।

लखन अतिशय क्रोधमे
संधान- शर उद्यत भेलाह
काल्हि धरि पूज्या जननि लेल
आइ ओ उद्धत भेलाह।

'वसुधा करब स्त्री शून्य'
बजिते राम सम्मुख ओ एलाह
मूर्च्छा पिता केर सूनि ओ
अविलम्ब कारण धरि गेलाह।

हा! करी विश्वास कक्कर
एहि जगतमे आब
अम्ब मँझिली आइ केहन
निर्घृण कएलनि काज !

भरत हित ओ राज्य मँगितथि
नहि तखनियो रोष
राम नहि, प्रिय भरत राजा
कए लितहुँ सन्तोष।

किन्तु वनमे वास
थिक निर्वासनक उद्योग
अछि न भुजबल वा धनुश्लाघा
सहब अभियोग !

पूज्य भैया, थिर कियै
आज्ञा दियौ, नहि देर
आइ झट अन्याय मूलक
हम करी उच्छेद।

बाउ लक्ष्मण, एहन क्षण
ई रूप की शोभैछ
पिता दु:खसँ छथि विकल
मुख परुष वच निकसैछ।

शान्त भए सोचू असह दु:ख
सुत-वियोगक नृप सहथि
जेठ सुत आकृति, विनय
देवर!अहाँमे ओ लखथि ।

आह! पूज्या भ्रातृजाया
अहाँ कहि सकलहुँ एना
पति विरह वा कष्ट विपिनक
सोचि नहि सकलहुँ केना ?

अम्ब शब्दक मान अपनहिँ
अम्ब कएलनि कातमे
जेठ तनयक छीनि हक
नृपकेँ फँसौलनि बातमे।

रोषसँ लक्ष्मण विमाता पर
उठाबथि अस्त्र नहि
प्रेमसँ पहिने, अनुज्ञा दय
बुझाबथि नीति कहि !

शान्त नहि भेला तदपि
लखि लखन अनयक खेल
मही भुजबलसँ विजित
जँ हो असंभव मेल।

गिरा रामक तखन सूनल
धीर संयम-युक्त
राम प्रियतम सभक गौरव
त्याग तप संयुक्त।

लखन बाजू क्रोध होयत
शमित केहि विधि प्रिय अनुज
की पिता- हत्या अभीप्सित
मातृ-वध वा बनि दनुज ?

हमर प्राणप्रिय भरत
एहि खेलसँ अनभिज्ञ जे
हम करी अभिघात ओहि
निर्दोष पर अभिप्रेत से ?

तीनु पातक घोर हे सौमित्र!
बाजू की करी
जनक- आज्ञा मानि हम
ई जन्म सार्थक नहि करी ?

मान जनकक जे बढ़ाबय
पुत्र ओ सत्पात्र
स्वार्थ वश अवमानना
सुत नहि परञ्च कुपात्र।

ई कशा केर चोट वाचिक
लखन सहि सकता कोना
सजल लोचन गिरा गदगद
चरण गहलनि कहि क्षमा !

तात! एतबहि अछि विनय
रहबै अनुग हम सर्वदा
अधिकार संगक ई हमर
हे तात!नहि खण्डित मुदा !

राम बरजथि लखनकेँ
अवसर ई जननी नहि देलनि
हँ, लखन जेता संगे
आज्ञा सुमित्रा झट देलनि।

आब बाजथि राम की
छलि तीनु माता एक सम
आदेश शिर पर धारि, देखलनि
दिसि हमर प्रभु एक क्षण !

ओहि दृष्टिमे करुणा, विवशता
छलै की, कोना कही
युवराज, भगिनी- पति कि सोदर
भ्रातृ सम पीड़ा सही ?

हमर ज्येष्ठा अपन इच्छेँ
वन-गमन-निश्चय केलनि
'पतिक सेवा धर्म थिक' कहि
ओ सभक सम्मति लेलनि !

भाग नहि दुइ लोक केर
कहियो भेलैये एक रंग
हम दुहू बहिनी पृथक्
रहितहु अहर्निश एक संग।

हम छलहुँ हतबुद्धि
एहि नाटक हमर की भूमिका
सभक निज निज प्राप्य
बस निष्प्राण हम्मर तूलिका।

मन्द स्वरमे लखन बजलाह
उर्मिले! पग मम बढ़ल
भाइ, भौजी संग हम कर्त्तव्य-
बन्धनमे बन्हल।

पिता छथि अवसन्न, माता दुइ
सुतक विरहेँ विकल
छाड़ि चललहुँ, चतुर्दिक्
एहिठाम जरि रहलै अनल।

आइ पति अधिकार लय
किछु मांगि रहलहुँ उर्मिले!
कर्तव्य भवनक सकल
परिजन प्रति निमाहब हे प्रिये !

सभक सोझाँ देल जे
आदेश कंटक सम गड़य
नोर नहि बन्धन नयन केर
तोड़ि धरती पर खसय।

आह! जहिना प्रेम, परिणय
सभ हठाते भेल छल
डांग दैवक शब्द बिनु
मांझे कपारे पर पड़ल !

दीदी बुझै छलि दु:ख मुदा
नहि बाट, छलि निरुपाय
प्रीतिसँ धय कर, नयन युग
नोर देलनि दाय।

रंग असमय लेभरि आयल
अजब नियतिक खेल !
हेतु की, के बुझि सकल
कियै बाम बिधना भेल।

द्वार मृत्युक दिसि बढ़ल
राजाक सेवा कर्म हो
सुत विरहसँ तप्त दुइ
जननीक धीरज धर्म हो !

छी फँसल मँझधार दुस्तर
जलधि कहुना पार हो
उर्मिला केर स्कन्ध सरिपहुँ
उचित की ई भार हो ?

ताहि पर ई वर्जना
की वज्र सम उर मम बुझल
आर्य लक्ष्मण! पाणि मम
की एहि परीक्षा हित गहल ?

भटकि रहलहुँ राति दिन
छाया जेना प्रेतक धेने
श्वास लै छी हम मुदा
छी कालिमा मृत्युक नेने।

हाय! भेलै एहि अवधमे
दृष्टि शनि केर घोर कारी
पुत्र- पुत्र करैत भूपति
वरण कएलनि मृत्यु भारी।

आब की, नहि राम छथि
नहि लखन जनकक पैर धेने
भरत सेहो देश केकय
संग शत्रुघ्नो केँ नेने।

चारि सुत, नहि एक ल’गमे
भाग्य की एकरे कहै छै
वा कुमार श्रवण पिता केर
शाप एहि तरहेँ फलै छै ?

चक्रवर्ती रघुक वंशज
वीरता पर्याय दशरथ
आर्त्त दीन विकल शोकातुर
तजै छथि देह नश्वर !

देखितो ताण्डव प्रतिक्षण
मृत्यु केर जन नहि बुझै
नीति नियमक कय अवज्ञा
स्वार्थ केर धधरा तपै !

राम लक्ष्मण विपिन वासी
भरत मातृक देश
छोट सुत शत्रुघ्न संगे
नृप एतय नि:शेष।

एहि दुसह क्षण गुरु वशिष्ठक
धैर्य संयम काज आयल
कर्म अंतिम नृपक समुचित
दूतकेँ केकय पठायल।

मृत्यु उपरान्तो नृपक
सम्मान बाँचल रहि सकय
संस्कार धरि मृत देह
सभ तरहेँ सुरक्षित रहि सकय।

दूत बस एतबहि कहब
अस्वस्थ नृप भेला अधिक
शीघ्र दुइ भ्राताकेँ नेने
आउ, बिलमू नहि तनिक।

भरत शत्रुघ्नक रथक ध्वनि
कानमे आबय जखन
अंतिम क्रिया अविलम्ब हित
सज्जित रहय सभ किछु तखन।

जननि सभ वैधव्य दंशेँ
छथि विकल जे अछि सहज
एक क्षणमे 'श्री' सकल
लुटि गेल हा! के की कहत ?

माण्डवी दीदीक कष्टक
अछि न कोनो छोर
ग्लानि केर, अपराध-बोधक
छनि न कोनो ओर।

आब की होयत जखन
बुझता भरत सभ बात
जनक- मृत्युक, राम-
वनवासक असह सन घात।

रचल विधना चारु बहिनक
एहन असहज भाग
अपराध बिनु रहलहुँ सहैते
कठिनतम आघात।

आबि गेला भरत, होयत आब की
शङ्का घेरायल
पिता-मृत्युक खबरिसँ दुइ भाइ
हतप्रभ छथि झमारल।

किछु क्षणक उपरान्त
लय नि:श्वास दीरघ भरत बजलथि
अनुज! आयु पिताक पुरलनि
तात राघव कतय गेलथि ?

आब हुनकहिमे पितावत्
स्नेह सम्बल सुखद ताकब
अनुज!नहि कानू कि हमहूँ
थिकहुँ अग्रज ध्यान राखब।

आब नहि धीरज कनिष्ठक
बान्ह भीतर रहि सकल
भ्रातृद्वय छथि कतय, एहिठाँ
पिता धरती पर पड़ल।

मृत्यु शोकक स्तब्धता
अथवा कि किछु आरो भयानक
लखि चतुर्दिक् भरत मनमे
बात ई आयल अचानक।

वनवासमे छथि राम
सीता लखन सेहो संग गेलथि
अहाँ लेल ई राज्य भूपति
भेंट दय दिवि गमन केलथि।

अम्ब! बाजू स्पष्ट की तात्पर्य
एहि कथनक न बुझलहुँ
पुत्र! गद्दी अहाँ लेल
वनवास राघव हेतु मँगलहुँ।

नहि मुदा छल ज्ञात नृप रामक
विरहमे प्राण तजताह
छनि एतेक दौर्बल्य शुल्कक
देयता नहि सहि पड़ेताह !

हन्त, ई संताप दुस्सह
गड़ल उरमे शूल
दुर्बुद्धि मायक एक क्षण केर
एहि बिहाड़िक मूल।

किन्तु ओहो की सुखी
हियमे मचल हाक्रोश
अहिबात तेजल प्रिय सुतक हित
आंखि ओहि अति रोष।

देखि नहि होइछ भरत दिसि
पाषाण भए गेलथि जेना
दु:ख, निराशा, ग्लानिसँ
म्रियमाण भए गेलथि जेना।

बात बुझने ओ घृणासँ
माइ दिसिसँ मुँह घुरौलनि
जन्मदात्री, जीवनक रस
छीनि की बदला चुकौलनि !

कृत्य पितरक राम करितथि
हन्त! भरतक कान्ह छनि
शोकमे डूमक कतय
अवकाश भरतक भाग्य छनि।

भूमि दिसि झूकल नयनमे
वेदना हिलकोर अछि
सभ प्रियक हम कष्ट कारण
केहन पातक घोर अछि।

दशा दारुण, दु:ख असहमे
के कोना ककरा सम्हारथि
किन्तु बड़की माय भए अति धीर
भरतक पीर बाँटथि।

माय छलि ओ असलमे
बिनु कहल दु:ख-सुख सुतक जानथि
एक सुत वन-कष्ट भोगल
तेँ कि दोसर काहि काटथि?

चारु सुत सम छल जननि हित
नहि कोनो कम वा कि सेसर
शत्रुघ्न, लक्ष्मण, भरत रामक
अनुज, प्रियता परिधि भीतर।

आइ बिसरल शोक निज
प्रतिपल भरत संग ओ रहथि
श्राद्ध भूपक हो उचित
ओ कृत्य विधि सुस्थिर कहथि।

माँ सुमित्रा धैर्य केर सागर
न किछु मुखसँ बजै छथि
एक सुत कानन पठाओल
अपरकेँ सभ भार दै छथि।

दय रहल निर्देश छथि गुरुवर
कि हो सभ कर्म समुचित
श्रद्धा विहित विधि कर्म हित
सन्नद्ध देवर शत्रुजित्।

अञ्जलि तिलतोयक देलनि
पित:प्रेत हो भुक्ति
कृतपुण्यक नौका अहँक
देमय भव-भय-मुक्ति !

अंतिम क्रिया विधि नृपक
सव्रत भरत निष्ठासँ पुरेलनि
जोड़ि कर आज्ञा गुरुक ओ
विपिन-हित अविलम्ब मंगलनि।

आब की एहि भरत कुलमे
सभ कुँवर वनवास करताह
राज्य बिनु राजाक चलतै कोना
कखनो गुरु बिसरताह ?

किन्तु एहि आघातसँ
बाहर होयब अनिवार्य अछि
राम दर्शन बिनु
भरत- सामान्यता अविचार्य अछि।

सभ चलल श्रीराम लग
हमरहु भेटल सौभाग्य ई
प्रियतमक दर्शन नयन भरि
जन्म- जन्मक काम्य ई।

सुखमय न कथमपि समय
पीड़ा प्रियक हरबै साध्य भरि।
निश्चिंत करबनि भार लखनक
लय, विपिनमे वास धरि।

पितृशोकक खबरि दारुण
सुनि भेला विह्वल सकल
वेश वल्कल, कालिमा दु:ख
ताप आबहु अछि बचल !

क्रिया कर्मक विधि सुतक
पूरा करक छल उभयकेँ
संतप्त हृदयेँ साश्रुनयनेँ
जल देलनि निज पितरकेँ।

की कही एहि समय
नहि किछु क्यो बजैमे क्षम छलै
शून्य आंखिक दृष्टि लखनक
आह! हिय-बेधक छलै।

श्रीहीन मायक देखि मुख
श्रीराम झट दु:खसँ उबरलथि
जन्म-मृत्युक चक्र ई अनिवार्य
कहि, पुनि मौन गहलथि !

भाव्य के अछि टारि सकलै
तेँ वृथा अछि शोक
शान्ति गहलनि पिता तजि
नश्वर तनक निर्मोक।

नजरि गेलनि कातमे
मुँह नमित कयने अम्ब मँझिली
छलि तृषातुर सदृश चातक
राम मुखसँ 'मातु'सुनि ली।

भाव हृद्गत बूझि राघव
स्पर्श चरणक कए बुझौलनि
विधिक लेखा अम्ब!के टारल
निमित्ते बस बनौलनि।

परस्पर आलापमे
बहु काल यापित भेल
श्रान्त सभ निज स्थान पर
विश्राम हित पड़ि गेल।

अग्रजा केर युक्तिसँ
क्षण एक प्रियतम संग
किन्तु ओ, नहि जानि हुनकर
हिय केहन निस्संग !

एक बेर दय दृष्टि दारुण
निकसि गेलथि झटितिमे
याचना, विश्वास, पीड़ा
सभ मिलित ओहि दृष्टिमे।

आइ धरि विस्मृत न दृष्टिक
पीर ओ मम आर्यपुत्रक
जीह धरि पहुँचल न एको
शब्द मुखसँ उपालंभक !

की कही, ओहि वीरकेँ जे
स्वप्न नहि देखय सुखक
राम-सीता चरण वन्दन
तोष कारण बस उरक।

राम क्यो छथि आन नहि
ओ रघुकुलक अभिमान
सत्य पर दृढ़, शील कंचन
भानु सम द्युतिमान।

सान्निध्य, सेवा हुनक जनिका
लभ्य, भाग्यक बली छथि
सौमित्र एहि पद- वन्दनामे
बहुत पुण्यक धनी छथि।

श्रद्धा रखै छथि माइ सम
भौजीक प्रति लक्ष्मण सदा
विपिन वासक कष्ट कम हो
यत्न छनि ई सर्वदा।

तोष मनमे हमहु राखक
दिवानिशि यत्ने करी
राघवक, दीदीक संग प्रिय
एहि गौरवक भावेँ भरी।

नहि भोग्य सुख ककरहु अवध
कर्त्तव्य आठो याममे
कठिन तपमे छथि निरत
भरत नन्दिग्राममे।

राज-काज समग्र समगति
चलि रहल साकेतमे
राज्यक संभारब लक्ष्य लय
रहलाह भरत अनिकेतमे।

हम घुरै छी विकल आत्मा
भवन सुन्न सपाटमे
सभ व्यवस्था देखि कहुना
पड़ि रहै छी कातमे।

कष्ट सबहक अति भयावह
जीवन जिबै सभ आशमे
माय, भगिनी सभ विकल
बेचैन राहुक पाशमे।

सहि रहल दुस्सह विरह हम
तोष मनमे अछि मुदा
लखन प्रभु दीदीक सेवामे
निरत छथि सर्वदा।

राम-पद- सेवा युगक युग
पुण्य संचय जे करय
भेटैछ ओकरहि, आर्य मन
सदिखन चरणयुगमे रमय।

किन्तु दीदी माण्डवी,
केहि पाप केर फल सहि रहल
भरत भैया, करथि शासन
वा तपस्यामे रमल ?

नगरमे रहितो न राजा
पग भवन कौखन धरथि
पादुका श्रीराम केर धय शीर्ष
धरणी पर सुतथि।

जरि रहल अनुतापमे,
तपमे तपाबै गात छथि
भोग सुख सभ त्याग कए
साकार पीड़ा तात छथि।

राजकाजक हित न कनियोँ
शिथिलता स्वीकार्य छनि
तेँ अहर्निश काजमे अति
व्यस्तता अनिवार्य छनि।

राम देलखिन मंत्र वनमे
धर्म भूपति लोक-हित
कल्याण हो जनताक
हो उद्यम न कौखन, अपितु नित।

मोन राखब अपन सेवक प्रति
जँ हो स्वामी कृपण
उचित नियमित वेतनक
भागी न जँ हो भृत्य गण।

अभ्युदय ओहि नृपक संग
राज्यक न संभव हे भरत !
कर्मकर प्रति अति सदय
सत्कृत्यमे रहबै निरत !

सत्कुलक गुणवान् कर्मठ
मंत्रिगणक सलाहसँ
वीर सेनापति कुशल
रणनीतिकरक विचारसँ।

राज्य केर सीमा-सुरक्षा
प्रथम तव करणीय हो
धर्म पूर्वक प्रजा पालन
सदति तव वरणीय हो।

गुप्त जे किछु मंत्रणा
विश्वस्त मंत्री संग हो
एहि हेतु नहि शैथिल्य
किंवा अनवधानक रंग हो।

राजनीतिक मंत्र राघव
विपिनमे देलखिन एना
ब्रह्म वचनक सम न
बुझितथि ई अनुज्ञा ओ केना।

राज-काजक हित समर्पित
जीवनक क्षण- क्षण जकर
अनुतापसँ संतापसँ
सीदित संगहिं मन छल तकर।

तजि देलनि निज सुख कि
वैयक्तिक सकल ओ कामना
भवनमे नि:स्पृह तपस्वी
दमित छल सभ भावना।

अवधमे अद्भुत बहै छल
हवा सात्विक मन्द
राजसी सुख भोग नहि
स्वार्थक न कत्तहु फन्द।

माण्डवी दीदी सहै छलि
विरह केर जे दंश
कोन कवि ओहि वेदना केर
बाँटि सकइछ अंश !

पति न कहियो एक क्षण लेल
नयन पत्नी दिसि घुरौलनि
नहि अपन पीड़ाक एकहु
भागसँ अवगत करौलनि।

एहन की दाम्पत्य, एहिमे
दोष की हुनकर छलनि
क्षण न एकहु शान्ति
नहि बजबाक किछु अवसर छलनि।

सासु केर सेवा तदपि
कर्त्तव्य हुनकर छल सदा
खसल भू पर सभ हठाते
हेतुमे जनिकर तृषा।

नहि घृणा नहि रोष छनि
दीदीक हुनका प्रति मुदा
अपराध-बोधक अनलसँ
जरइत जननि छथि सर्वदा।

भेटलनि न माया, राम नहि
जे सभ छलनि सेहो गेलनि
प्रेम आ वात्सल्य सपना
सुयश त' छाउरे भेलनि !

सिंहिनी ओ आइ श्रीहत
कोन धएने रहै छथि
दीदी हुनक सेवाक क्रममे
समय यापित करै छथि।

हम अपन दु:ख सभक पीड़ा
लखि बुझै छी अन्यथा
अवधमे अछि काल पैसल
क्यो सुखी नहि सर्वथा।

सभक मुँह नकली हँसी
नहि क्यो बुझय उर वेदना
माँ सुमित्रा राम-जननी
सभ लगल छथि अनमना।

कथा सुनबथि जननि कखनो
सुतक लीला बाल्य केर
माय छोटकी धीरता संयुक्त
स्त्री दुर्वार्य केर।

अवधान हम्मर छल कि जननी
ज्येष्ठ नहि होइथि विकल
श्रुतकीर्ति माता सुमित्रा चर्यामे
लागल छथि अटल।

ध्यान चहुँमुख भरत-जननी
राति दिन दीदी करथि
बाँट बखरा बिनु जननिगण-
सुश्रूषामे सभ रमथि।

समय यापित भए रहल छल
एकरस एहि भवनमे
शीत वर्षा ग्रीष्म नहि
मधुमास सौरभ पवनमे।

किन्तु माता एक नहि
ग्रास दु:ख-दैन्यक बनलि
नहि बहिन एहि स्थिति विषम
निज धैर्य संबलकेँ तजलि।

काय कृश सबहक मुदा
व्रत नियमसँ आभा बढ़ल
राम सीता लखन संग
परिजन सकल तपमे रमल।

स्थान केर बस भिन्नता,
लक्ष्य दायित्वक वहन
अवधमे सुख स्थापना
असुर केर वनमे दलन।

दिवस हो कतबो कठिन
गुणधर्म बीतब छै ओकर
बीति गेलै वर्ष तेरह
स्मृति सहायक छल तकर।

किन्तु हा! ऋषि मुख सुनल
वनमे दशानन कृत्य जे
अपहरण दीदीक, औखन
शेष दु:ख, प्राप्तव्य से।

सभ बहिन हम, मातु सभ
ईशक निहोरा कय रहल
आर्य रामक भुजक बल
देखथु असुर, पड़ि जाय कल।

दलन असुरक सज्जनक सुख
छलनि प्रण श्री राम केर
किन्तु नहि बहिनक परीक्षा
योग्य भैया राम केर।

दीदी बुझै छलि नृप-कुलक
जन-मानसक संकीर्णता
अग्निदेवक आन देवक
साक्ष्य केर स्वीकार्यता।

रामक सुयशमे दाग
नहि ई सह्य, सहितथि कोना सीता
अग्निसँ निर्लिप्त तेजोमयि
निकसलथि ओ पुनीता।

सभ विपर्यय सहि घुरल छथि
अवधभूमिक असल भास्कर
दीर्घ कालिक तम अमावस
काटि ज्योतिक प्रबल आकर।

सभ मुदित, घर घर जरल
दीपक असंख्यो आवली
भवन-राजक छब अनूपे
नाम गुण रामक बली।

कष्ट अतिशय काटि भेटै
सुख, तकर की वर्णना
तप्त भू पर वृष्टि धारक
के करै अभिव्यञ्जना।

देखि दीदी नहि लगै छल
ओ एतेक पीड़ा सहल
सदति स्मित मुख सभ बहिन संग
गप सरक्का चलि रहल।

सहन शक्तिक मूर्ति दीदी
धैर्य केर प्रतिमान छलि
ओ मिथिक संग अवधभूमिक
भाग्य आ अभिमान छलि।

सभ बहिन, सभ भाय केर
प्रेमक सगर चर्चा छलै
त्यागसँ बाढ़य अपेक्षा
सूक्ति ई सार्थक भेलै।

हन्त! सुख केर आयु छल अत्यल्प
नहि क्यो ई जनै छल
राम-सीता-प्रेम राहुक पाशमे
सदिखन फँसल छल।

गर्भिणी पत्नीक निर्वासन
कोना प्रभु सोचि सकलाह
आ लखन आदेश अन्यायक
झुका मस्तक पुरेलाह !

आह! की पुरुखक चरित
केर थाह पायब अछि कठिन
वा कि नृप आदेश सम्मुख
द्युति सभक होइछ मलिन !

दण्ड जँ समुचित बुझेलनि
साहस बजै केर काम्य
मातु, पत्नी, भाइ -भावहु
गोप्यता की मान्य ?

रघुकुलक ई रीति जगमे
ख्यात केहि कारण अहो!
वचन रक्षा प्राणसँ बढ़ि
एतय की पालन न हो ?

प्राण देलनि श्वसुर, सहलनि ग्लानि
गोपन नहि मुदा
आदेश दय नृप एहि जगतसँ
अचिर लेलनि चिर विदा।

न्याय पथ जे चलि रहल
प्रश्नक परिधि करणीयता
संशय जँ कनियों, की उचित भेल
दण्ड केर सम्पाद्यता ?

राजधर्मक ब्याज रजकक
बात केर माहात्म्य
वा कि शङ्का बीज मनमे
राघवक सम्भाव्य ?

विश्वास केर जे खान ल'क'
खोंइछमे आयल छलहुँ
लव ओकर नहि अवधमे
हम पाबि अति घाहिल भेलहुँ।

ककर ई कुदृष्टि रघुकुलकेँ
भयाकुल कए रहल
घनघोर अनयक कालिमासँ
देश आवृत भए रहल।

आर्यकेँ हम की कही,
ओ जरि रहल अनुतापसँ
आज्ञा नृपक, व्यापृत मुदा
अति मुखर मौन- विलापसँ।

सौमित्र निज चाञ्चल्यसँ
सभ घाव जे भरने छलाह
प्रेम केर अक्षुण्ण निधिसँ
स्नात जे कएने छलाह।

ओ कतय दिन शेष, लक्ष्मण
भेल छथि पाषाण सम
जँ बेगरते अबथि सम्मुख
ओ रहै छथि नत नयन।

की दियनि उपराग- उलहन
दारुण दशा हिनकर स्वयं
शल्य केर पीड़ा सहै छथि
औषधि बिना चुप मुँह स्वयं।

विश्वस्त सैनिक सदय राजा
लखन रामक रूप नव
स्नेह पूरित भ्रातृभावक
नहि भेटै अछि अंश लव।

कारण बिना नहि शब्द मुखसँ
बहिर्गत होइछ एतय
हँसी- ठट्ठा, सहज परिहासक
भेटत सत्ता कतय ?

इच्छा जननिक मूलमे
दशरथ आज्ञा हेतु
अनुवर्ती राघव बनल
पत्नी त्यागक सेतु।

अवध-तंत्र निर्वासनक
रुधिर शिरामे व्याप्त
एक दण्ड दारुण चलन
आन हो कि ओ आप्त।

मिथिलाभूमिक प्राण जे
शक्तिमती- कर भाग
भेंट पतिक भेटल झटिति
हृदयहीन अपवाद।

अविश्वास शङ्का प्रबल
अनुखन चित्त अशांत
कोन कथा ककरा कही
भवन घुरी हम भ्रान्त।

उद्वेगक कारण पुछल
लक्ष्मण पबितहि ओट
वश ने तनिक निज पर रहल
भेल हृदय विस्फोट।

कल्याण योग्या हम मुदा
नहि स्वल्प व्यापित मोद मन
लखन! कोनो वन कि हमरहु हित
चुनल अछि राज्य जन?

हा! कलंक सीताक माथ जँ
ठाढ़ि समक्ष हुनक अनुजा
गर्भवती हमहूँ छी अधुना
दण्ड मंगैत जनक- तनुजा।

देखि हमर आक्रोश प्रथम
सौमित्र नयन विस्फारित
पकड़ि स्नेहसँ रघुकुल नंदन
कहलनि जुनि होउ सीदित।

भाव्य छलै जे भेलै, काटि के सकल
एखन धरि विधना लेख
राजा अवधक नहि निष्ठुर छथि
छनि हुनको हिय दया- दरेग।

की बुझैत छी ओ प्रसन्न छथि
सदति रिक्त हुनकर वामांग
किन्तु प्रजा- जन- रंजन लक्ष्ये
उचित प्रिये!नहि वचनक डांग !

हँ अवश्य अपराध कएल अछि
राज अवध मिथिला धी संग
ग्लानि गड़ल भैया संग हम सभ
परिणय- वचन कएल अछि भंग।

देखि हुनक अनुताप हृदय केर
दोष न हुनका दै छी
राज्य अवध बहु मूल्य नेने छनि
शोक न तेँ बढ़बै छी।

छली बहिन ओ अहँक, प्रिया ओ
श्रीरामक कनियोँ नहि कम
मोन पड़नि नहि यन्त्र बनल तेँ
कखनहुँ नहि ओ लै छथि दम।

नहि कहैत छी दोष हमर कम
शल्य जकाँ ओ दै अछि पीर
एखन समय नहि प्रिये! अहाँ
मुख निकसय बेधक बोली तीर।

ईश्वर केर अवदान अतुल शिशु
स्वागत करू प्रिये!एहि काल
बिसरि अतीतक सभ कटु अनुभव
उचित एखन नहि चिंता-व्याल।

एहि तरहेँ बहु भांति कहल
सौमित्र उचित सभ बात
पहिल बेर सीताक प्रसंगे
निकसल किछु गप स्यात् !

प्रेयसी, पत्नीसँ पाओल
मातृ- पद हम सभ बहिन
तालता शिशु केर करै क्षण
स्मृति अबथि जेठकी बहिन।

ओ कतय छथि, कोना हयतीह
कुक्षि- शिशु केर हाल की
जँ हेथिन ईश्वर सहायक
भेल छेटगर बाल की ?

क्यो न एहि नगरी कखनियो
नाम सीता लैत अछि
राजमाता- नयनसँ निश्शब्द
जल झहरैत अछि।

पौत्र देखब स्वप्न भेल
जनकात्मजा होयतीह कोना
अन्त: न आबथि राम कखनहुँ
प्रश्न की पूछथि, कोना ?

राम मन केर हाल की
के कहि सकै अछि एहि भुवन
शब्द अथवा कल्पनामे
की बन्हायल अछि पवन ?

राज्य केर विस्तारमे संग
भाइ व्यापृत ओ रहथि
भैया भरत, शत्रुघ्न देवर
लखन से नहि गमि सकथि।

एक दिसि आक्रोश अतिशय
राम लेल जनमैत अछि
हुनक मुख केर शून्यता लखि
मन मुदा सहमैत अछि।

राज्य सिंहासन एतेक
बलिदान केर कामी कियै
व्यष्टि सुखकेँ होम कए
होइछ यशक भागी कियै ?

रामराज्यक यश चतुर्दिक्
नाम इतिहासो लिखत
किन्तु सीता केर स्थितिक
कारण भविष्यत् नहि पुछत ?

आ जनकपुर केर सकल
नर-नारि टूटल आस लय
साहस करत दुहिता हमर,
जायत अवध-सुत हाथ धय !

सीताक जीवन हाय! दैवो
नित परीक्षा हित गढ़ल
जनक-प्रिया रघुनाथ भार्या
विषम विष- पीड़ा सहल।

पैघ भेलीह, पिता केर प्रण
वर-चयन-बाधक बनल
गौर पूजक फल, शिवक धनु
भंग प्रिय-साधक बनल।

किन्तु दिन चारिक सुखक
उपरान्त वन-कण्टक सहल
हाय ! वज्राघात! रावण
हरण धरि भाग्ये लिखल।

ग्रह अवग्रह भय पुनः
अपवाद दुस्सह ज्वाल
अवधसँ निष्कासनक
हा ! दण्ड दारुण भाल !

दु:सह हुनक स्थिति सोचि
हियमे अछि व्यथा घनघोर
पीड़ा प्रसव, शिशु पालनक
की स्थिति, न चिन्ता थोड़।

उपरांत परिणय सभ बहिन
अबितहुँ जँ नहि एहि गाम
छल असंभव एहि दशा
सहितहुँ अनय अविराम।

नहि साध्य किंचित्, सहि रहल तेँ
सभ बहिन ई वेदना
मरि गेलै एहि अवध-तन्त्रक
पूर्णतः संवेदना।

शिशु सकल सभ पैघ भए
शस्त्रास्त्र-शिक्षण हित गेलथि
राजकाजक नीतिज्ञानक
सुगुरुसँ शिक्षा लेलथि।

मध्य एहि विस्तार राज्यक
करथि भ्राता सभ एतय
विजय उपरान्तो प्रजा हित
मुख्य, सभतरि घोष जय।

ऋषिगणक गुरुजन सभक
निर्देशसँ प्रभु यज्ञ ठानल
अनुवर्तिता प्रभु रामचंद्रक
मान्य 'हय' उन्मुक्त छाड़ल।

स्वीकार्य छल अनुवर्तिता
ककरा न भुवि श्री राम केर
के धरत तेँ अश्व, ककरा भय
न अछि निज प्राण केर ?

किन्तु अजगुत सूनि, सगरो
अवधमे हलचल मचल
कुमार मुनि एहि यज्ञ-अश्वक
रास गहि आश्रम चलल।

आब की हे दैव! रण केर दुंदुभी
अविलम्ब बजतै
रघुकुलक रण ऋषिजनक संग
की उचित किंचित् ई हेतै ?

यज्ञ केर अश्वक कियै
मुनिसुत अवज्ञा आइ केलनि
की कोनो अनिवार्य घटनाक्रम-
निकटता ओ देखेलनि ?

शत्रुजित् करताह की
दुइ बालकक संग युद्ध
अश्वरक्षा बिनु केने
क्षत्रिय हेताह की शुद्ध ?

रक्ष्य शिशु, ऋषि पूज्य स्थितिमे
धर्म- नरपति की उचित
राम आज्ञा बिनु दिअर
निर्णय लेता संशय ग्रथित !

चिंताक अनहोनीक
आशंका सभक मनमे बसल
नहि हेतै अनुचित अनर्थक
विश्वास पूर्वहिसँ खसल।

तप्त मरुमे रहक आदति,
लव बसातक कल्पना नहि
भवनमे शुभ क्षणक ककरहु
स्वप्नमे संभावना नहि।

छल न ओ ऋषि पुत्र,
औरस सुत ओ सीता राम के
रविपुञ्ज सम्मुख अभय
होयत ठाढ़, तजि रामांश के ?

ई छलै शुभ क्षण मुदा
विश्वास हियमे नहि प्रबल
ई मिलन केर क्षण कि पुनि
दुर्भाग्य आओत बल सदल ।

संशय मनक नहि बिनु आधारें
लोकमन बदलल कतय ?
हेतु जे निर्वासनक छल
साकाररूपेँ अछि एतय !

स्तब्ध सभ, सभ छथि अवाके
क्यो न स्वागत हेतु आगाँ
ठाढ़ि छथि सीता सभासद बीच
सुत द्वय अम्ब पाछाँ।

आह! ई युवराज, हिनकर
स्थान की परिधान की
भवितव्यतासँ पार पायब
भेल छै आसान की ?

लाजसँ हम गड़ि रहल
अपमानिता दीदी हमर
चीन्हि नहि सकलै अवध जन
शील द्युति जनिकर प्रखर।

गिरा रामक बहुत दिन पर
सूनल वज्र प्रहार सन
अपमानिता बहुलांछिता हा
अन्य के प्रभु-दार सन ?

सभा मध्य अभियोग सहलि ओ
हम सभ बहिन मौन गहने
धिक् धिक् जीवन राजवधू केर
जीबय सदति गरल पिउने !

किन्तु सीता मिथिक भूमिक
अबल नहि सबला सुता
अनल तपमे ओ तपलि
ताकति अलौकिक संभृता।

आइ नहि सीता ओ दारा
कुलवधू रघुवंश केर
पसरल चतुर्दिक् रूप सौरभ
वीर सुत अवतंस केर।

छल शान्त सभा, तखनहि सुनलक
जनता निर्भीक अकम्प गिरा
नहि प्रश्न उचित, मर्यादा केर
बहइत न रुधिर अछि तंत्र शिरा।

नहि शरणागत, नहि पुनः परीक्षा
आइ देमय एत्तय एलहुँ
ऋण अवधक मस्तक पर किंचित्
ओ सूदि संग घुरबय एलहुँ।

रघुवंशक किछु अंश संग
नेने निष्कासित भेल छलहुँ
ऋणमुक्ति हेतु दुइ तेजपुञ्ज
स्वीकार करू, कृतकर्म भेलहुँ।

नहि प्रश्न कोनो मुख पर आओत
निज परिचय वीरद्वय अपने
नहि पुरुषक शील संदिग्ध एतय
शर अविश्वास वामा सहने।

राखू न कोनो भय आशङ्का
सुतद्वयक म'न नहि देल घृणा
ऋषि वाल्मीकि दीक्षित शिक्षित
मन-वचन-कर्म छनि हिनक क्षमा।

हँ, यत्न रहल हम्मर अवश्य
निज बुद्धि भरोसेँ करथि काज
होमय निर्णय आधृत विवेक
जक्कर मस्तक शोभैछ ताज।

आबालवृद्ध- वनिता रक्षित
नहि अनाचार हो सह्य तनिक
थिक आर्य धर्म उपकार परक
थिक धर्म मान-सम्मान जनिक।

ओ धर्म सिखाओल अछि सुतकेँ
जे उचित बुझी ओ अभय करी
नहि परम्परा अपवाद ब्याज
अनुचित-पथ कथमपि डेग धरी।

ओहि तपोदीप्त नारी सम्मुख
बाजत ककरा साधंश थिकै
अति हृदय भेदिका ई कटुता
रानीक सहल ई दंश थिकै।

मौन पसरल आइ एहि संसद
ने ककरो होश
गेलि सीता एहि नगरसँ
हन्त!भाग्यक दोष !

माय कौशल्या खसल भुवि
हाय! की आब भाव्य
'जल लाउ, वैद्य बजाउ' एतबहि
शब्द एत्तय श्राव्य।

हीराक परिचिति शून्य जे
द्युति मूल्य तेँ की प्राप्य
गुण संयुता नृप लांछिता
सीताक निष्कृति भाग्य।

अवधसँ नहि लेल किछु
देलनि मुदा बहुमूल्य
छथि पयोधर सम प्रदात्री
जगतमे सम्पूज्य।

खसल नाटक केर यवनिका
सभ गेला निज निज निलय
ठाढ़ि हम हतबुद्धि छी
भवितव्य अछि की की प्रलय !

घात आ प्रतिघात अवधक
देखि-सहि अति श्रान्त
मातृ विरहित लव-कुशक
स्थिति देखि मन उद्भ्रान्त।

बीति गेलै बहुत दिन,
नहि क्षण प्रमोदक छल कोनो
सभ छलै कर्त्तव्य रत,
सुख तोष नहि भेटलै कोनो।

हमर सबहक पुत्र सभ
निज पिता सम विक्रम पेलनि
गुरुजनक निर्देशनामे
राज्य बहु अर्जित केलनि।

नहि कोनो ककरो छल अधीन
सभ छला स्वतंत्र नृपति राज्यक
फहरैत न्याय केर ध्वजा छलै
सुख- प्रजा- निरत सभ भूपालक।

छल प्रतीति आब वानप्रस्थ
आश्रमक समय लगिचायल अछि
दायित्व सकल निज भेल पूर्ण
मन तप जप हित अगुतायल अछि।

किन्तु होइछ वैह जे
विधना लिखल अछि लेख
शक्ति ककरा जे मिटाबय
विधिक पाड़ल रेख।

एक भिनसर हमर मन
विचलित अतीव उदास छल
जानि नहि ई काल पुनि
दुरदृष्ट केर भेल ग्रास छल।

एक जाग्रत मुनि एलाह
ई गप सुनल छल आर्यसँ
अजगुत न रघुवंशी अतिथि- सेवा
करथि चिर कालसँ।

भोरसँ अपराह्न धरि
नहि जानि छल की मन्त्रणा
द्वार पर प्रस्तुत लखन
प्रभु कए रहल अभ्यर्थना।

व्याघात नहि एकान्तमे होमय
ऋषिक निर्देश छल
सौमित्र हित इच्छा प्रभुक
देवोसँ बढ़ि अनुदेश छल।

हन्त! दुर्वासाकेँ तत्क्षण
भेंट प्रभु संभव कोना ?
कोप- भागी ऋषिक राघव
सहथि ई लक्ष्मण कोना ?

क्रोध दुर्वासाक छल प्रख्यात
के नहि ई जनै छल
शाप केर भयसँ सभक मन
पात कदली सम कँपै छल।

केहन छल तप, सिद्धि
नहि संयम न वश छल रोष पर
अहम् मद आवृत सदा, झट
नहि सुनल ओ, दोष पर।

लखन दुविधामे फँसल
क्षण एक भ्रान्तिक मोह
अग्रजक कल्याण हित
किंचित् न दण्डक सोह।

राजाक आज्ञा ऋषि अनुज्ञा
भेल जँ नहि मान्य
मृत्यु निश्चित किन्तु अनभल
प्रभुक तेँ की काम्य !

दण्ड मृत्युक दए सहथि
अग्रज महत् नहि वेदना
पैसि सरमे ओ अतल
प्राणक कएल उत्सर्जना।

आह! क्षत्रिय वीर भए ओ
आत्म- हत्या- अघ केलनि
अपर जन्मो पाप- दु:ख- स्वीकृति
बिना संशय लेलनि।

एहि त्याग आ बलिदान पर
गौरव करी वा शोक
संग हुनकर अवधि एतबहि
भए गेलाह निर्मोक।

जाउ प्रिय! अहँ क्रोड़ शान्तिक
पाउ, दै छी हम विदा
बहुत थाकल अनुग भए,
अहाँ जाउ आगू सर्वदा।

श्रान्ति चिर विश्रांति बेला
शेष अंशक मृत्यु खेला
आह!सहि सभ चोट नहि कानब
कि सुरपुर कान्त गेला।

मृत्यु अछि शाश्वत कि
सभ मर्त्यक लिखल ई भाग्य
जीर्ण वसनक त्याग, नव
परिधान मनु केर प्राप्य।

संग सौमित्रक हमर
यात्रा रहत स्मरणीय
जन्म जन्मान्तर लखन सम
ईश! पति वरणीय।

श्रान्त छी अतिशय विधाता
सुनि लिय' मम कथ्य
मरण हमरो अछि प्रतीक्षित
नहि बचल किछु लक्ष्य।

किन्तु नहि भिक्षा अभीप्सित
मृत्यु केर यमराज !
सांस जा धरि शेष निशि दिन
हम करब निज काज।

देह लक्ष्मण शेष, यश
हुनकर सदा रहतै विमल
एकान्त प्रभु सेवी
लखन निष्ठा जगत करतै सुफल।

दीदी गेली, प्रियतम गेला
सभ वृद्ध जन पहिनहि गेला
हम सभ एतय निरुपाय
मृत्युक देव अति निष्ठुर भेला।

आइ हम एकान्तमे
गणना करैत अतीतमे
घूमि रहलहुँ रहरहाँ अनुभव
मधुर वा तीतमे।

निज मनक सभ बात जे
भेटितय समय, कहितौं बहुत
आइ एहि वार्धक्यमे सुनियौ
कथा सुख-दु:ख-प्रयुत।

वेदना, वैवश्य नहि
मिथिला सुता केर शक्ति
धीरता संयमक संगमे
राम पगतल-भक्ति ।

सीता चरित अति स्तुत्य
पूज्या ओ हमर ज्येष्ठा रहल
चरणयुग सेवाक हित
सर्वस्व अर्पण के कयल ?

एतबहि मनोरथ छल हमर
लक्षित हमर कर्तृत्व हो
बाल्यसँ वार्धक्य धरि
नहि कोनमे, प्रामुख्य हो।

कवि स्वल्प बनि कए वैद्य
मर्मक असह पीड़ाकेँ बुझल
कृतकृत्य हम, नहि आर किछु
दुहिता सुनयना कहि रहल।

आइयो एहि विदा क्षण
इतिवृत्त जे किछु कहि गेलहुँ
क्यो बुझय हमरो मनक
विचलन जे चुप मुँह सहि गेलहुँ।

राखि सोझाँ भार हल्लुक
करब केवल ध्येय
राम सीता यशक लव
भेटओ न उर्मिल प्रेय।

गगनमे द्युतिमान ग्रह नक्षत्र
होइछ प्रिय सभक
किन्तु जे नहि दृश्य ओक्कर
भाव बुझतै क्यो मनक !

तरु लदल फलसँ कि छाया
गन्धमय किछु ठाढ़ि हो
आकर असंशय औषधिक
सदिखन प्रशंसित प्राण हो।

दोष नहि जगमे सदा
गुणकेँ भेटै छै मान
किन्तु की सामान्यकेँ
बूझब उचित निष्प्राण !

दूभि जे पगतल छुबै अछि
प्राण ओकरहुमे रहै अछि
सिंह केर अस्तित्व संग
खरहा की वनमे नहि जिबै अछि ?

जीव सभ एहि प्रकृति चक्रक
अंग उपयोगी बनल
ऊंच किछु, नीचो बहुत
किछु दृश्य अदृश्यो रहल।

अणु सदृश हो जीव अथवा
सिंह, गज, वृक बल- निचय
अस्मिता बाँचय सभक ई
व्याप्ति भावक मन-निलय।

स्वत्व परिचिति ध्येय केवल
भाव हद्गत हम सहेजल
आइ बजलहुँ एतय किछु
जे अतलमे दिन बहुत सैंतल।

प्रिय पिता, माता सुपूज्या
नहि कोनो उलहन मुदा
अवधान संतति एक सम
दातव्य, बिसरल ई सदा।

ई शब्द नहि केवल हमर
ओहि सभक, जे चुप मुँह रहल
हेतु किछु हो, मुख मुदा
जाबी सदा लागल रहल।

सरिताक वीचिक वेग पर
बंधन लगायब नहि उचित
वर्धिष्णु वृक्षक ठाढ़ि पर
कुड़हरि चलायब की उचित।

हम उर्मिला चुप मुँह मुदा
उर जलधि ऊर्मि अमाप
मसि छल न करमे लेखनी
लिखि भेल नहि निज ताप।

बहुत बजलहुँ, बहुत दिनसँ
छल हृदय पर भार
जमल हिम पघिलब शुरू अछि
अन्त नहि तेँ धार।

इति शम्